Postal Reg. No.GDP -45/2020-2022

अल्लाह तआला का आदेश

وَ لِلّٰہِ مَا فِی السَّمٰوٰتِ وَ مَا فِی الۡاَرۡضِ ؕ یَغۡفِرُ لِمَنۡ یَّشَآءُ وَ یُعَذِّبُ مَنۡ یَّشَآءُ ؕ وَ اللّٰہُ غَفُوۡرٌ رَّحِیۡمٌ

(सूरत आले-इम्रान आयत :130)

अनुवाद: और अल्लाह ही का है जो आकाशों और ज़मीन में है वह जिसे चाहता है क्षमा कर देता है और जिसे चाहता है आज़ाब देता है और अल्लाह बहुत क्षमा करने वाला और बार बार रहम करने वाला है।

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡدِ

وَلَقَدۡ نَصَرَکُمُ اللّٰہُ بِبَدۡرٍ وَّاَنۡتُمۡ اَذِلَّۃٌ

वर्ष 5

मूल्य 500 रुपए वार्षिक

साप्ताहिक क़ादियान

बदर

Weekly BADAR Qadian HINDI

अंक- 31

संपादक शेख़ मुजाहिद अहमद

उप संपादक सय्यद मुहियुद्दीन फरीद

8 ज़विल हज्जा 1441 हिजरी कमरी 30 वफा 1399 हिजरी शमसी 30 जुलाई 2020 ई.

अख़बार-ए-अहमदिया

रूहानी ख़लीफ़ा इमाम जमाअत अहमदिया हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल;ल अज़ीज सकुशल हैं। अलहम्दोलिल्लाह। अल्लाह तआला हुज़ूर को सेहत तथा सलामती से रखे तथा प्रत्येक क्षण अपना फ़ज़ल नाज़िल करे। आमीन

ज़रूरत है नेक कर्मों की। ख़ुदा तआला के हुज़ूर अगर कोई चीज़ जा सकती है तो वे यही कर्म हैं। अगर केवल मौखिक बात तक और दिखावा तक ही बात हो तो दूसरे लोगों में और हम में फिर अन्तर क्या होगा और दूसरों पर क्या बरतरी! तुम सिर्फ अपना व्यावहारिक नमूना दिखाओ और इस में एक ऐसी चमक हो कि दूसरों उस को क़बूल कर लें।

उपदेश सय्यदना हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम

नेक कर्म और तक़्वा

मैं अपनी जमाअत को सम्बोधित करके कहता हूँ कि ज़रूरत है नेक कर्मों की। ख़ुदा तआला के हुज़ूर अगर कोई चीज़ जा सकती है तो वे यही कर्म हैं। اِلَیۡہِ یَصۡعَدُ الۡکَلِمُ الطَّیِّبُ (फ़ातिर:11) स्वंय ख़ुदा तआला फ़रमाता है। इस वक़्त हमारे क़लम रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की तलवारों के बराबर हैं लेकिन विजय और सहायता उसी को मिलती है जो मुत्तक़ी हो। ख़ुदा तआला ने यह वादा फ़र्मा दिया है। کَانَ حَقًّا عَلَیۡنَا نَصۡرُ الۡمُؤۡمِنِیۡنَ (अर्रूम:48) मोमिनों की सहायता हमारे जिम्मा है। और لَنۡ یَّجۡعَلَ اللّٰہُ لِلۡکٰفِرِیۡنَ عَلَی الۡمُؤۡمِنِیۡنَ سَبِیۡلًا (अन्निसा :142) अल्लाह मोमिनों पर काफ़िरों को राह नहीं देता इस लिए याद रखो कि तुम्हारी फ़तह तक़्वा से है वर्ना अरब तो केवल लेक्चरार और ख़तीब और शायर ही थे। उन्होंने तक़्वा धारण किया। ख़ुदा तआला ने अपने फ़रिश्ते उनकी सहायता के लिए अवतरित किए। इतिहास को अगर इन्सान पढ़े तो उसे नज़र आएगा कि सहाबा किराम रिज़्वानुल्लाह अलैहिम अजमईन ने जितनी विजय कीं वे इन्सानी ताक़त और कोशिश का नतीजा नहीं हो सकती। हज़रत उस्मान रज़ी अल्लाह अन्हो तक बीस साल के अंदर ही अंदर इस्लामी सल्तनत विश्वव्यापी हो गई। अब हमको कोई बताए कि इन्सान ऐसा कर सकता है? इसी लिए अल्लाह तआला बार बार फ़रमाता है اِنَّ اللّٰہَ مَعَ الَّذِیۡنَ اتَّقَوۡا وَّ الَّذِیۡنَ ہُمۡ مُّحۡسِنُوۡنَ (अन्नहल:129) अल्लाह तआला मुत्तक़ियों के साथ है और सिर्फ तक़्वा मुहब्बत इलाही को जज़्ब नहीं करता وَّ الَّذِیۡنَ ہُمۡ مُّحۡسِنُوۡنَ भी हूँ।

मुत्तक़ी और मुहसिन

मुत्तक़ी के अर्थ हैं डरने वाला। एक बुराई को छोड़ना होता है और एक ख़ैर को चाहना। मुत्तक़ी बुराई को छोड़ने का अर्थ अपने अंदर रखता है और मुहसिन ख़ैर को चाहता है। मैंने इस के बारे में एक हिकायत पढ़ी है कि एक बुज़ुर्ग ने किसी की दावत की और अपनी तरफ़ से मेहमान नवाज़ी का पूरा प्रबन्ध किया और हक़ अदा किया। जब वह खाना खा चुका तो बुज़ुर्ग ने बड़ी विनम्रता से कहा कि मैं आपके योग्य सेवा नहीं कर सका। मेहमान ने कहा कि आपने मुझ पर कोई एहसान नहीं किया बल्कि मैंने एहसान किया है क्योंकि जिस समय तुम व्यस्त थे मैंने तुम्हारे मकान को आग नहीं लगाई अगर मैं तुम्हारी जायदाद को आग लगा देता तो क्या होता। अत: मुत्तक़ी का काम यह है कि बुराईयों से रुक जाए। इस से आगे दूसरा दर्जा ख़ैर चाहने का है। जिसको यहां मुहसनीन के शब्द से अदा किया गया है कि नेकियां भी करे। पूरा सच्चा इन्सान तब होता है जब बुराइयों से बच कर यह अध्ययन करे कि नेकी कौन सी की है?

कहते हैं कि इमाम हुसैन रज़ी अल्लाह अन्हो के पास एक नौकर चाय की प्याली लाया। जब क़रीब आया तो ग़फ़लत से वह प्याली आप रज़ि के सिर पर गिर पड़ी। आप ने तकलीफ़ महसूस करके ज़रा तेज़ नज़र से ग़ुलाम की तरफ़ देखा। ग़ुलाम ने धीरे से पढ़ा। وَ الۡکٰظِمِیۡنَ الۡغَیۡظَ (आले इम्रान :135) यह सुन कर इमाम हुसैन रज़ी अल्लाह अन्हो ने फ़रमाया کَظَمۡتُ (कज़मतु) ग़ुलाम ने फिर कहा وَ الۡعَافِیۡنَ عَنِ النَّاسِ ۔ कज़म में इन्सान ग़ुस्सा दबा लेता है और इज़्हार नहीं करता है परन्तु अंदर से पूरी रजामन्दी नहीं होती इस लिए अफ़्व की शर्त लगा दी है। आप ने कहा कि मैंने अफ़्व किया। फिर पड़ा وَ اللّٰہُ یُحِبُّ الۡمُحۡسِنِیۡنَ ۔ अल्लाह के महबूब वही होते हैं जो कज़्म और अफ़्व के बाद नेकी भी करते हैं। आप ने फ़रमाया: जा तुझे आज़ाद भी किया। सच्चों के शिष्टाचार ऐसे हैं कि चाय की प्याली गिरा कर आज़ाद हुआ। अब बताओ कि यह शिष्टाचार उसूल की उम्दगी ही से पैदा हुआ।

आँहज़रत सल्लल्लाहो वसल्लम की क़ुव्वत क़ुदसी

अल्लाह तआला ने फ़रमाया فَاسۡتَقِمۡ کَمَاۤ اُمِرۡتَ (हूद: 113) अर्थात सीधा होजा। किसी प्रकार का बुरा काम, टेड़ापन न रहे फिर राज़ी हूँगा। स्वंय भी सीधा हो जा और दूसरों को भी सीधा कर। अरब के लिए सीधा करना कितना मुश्किल था। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने लोगों के पूछने पर फ़रमाया कि मुझे सूरह हूद ने बूढ़ा कर दिया। क्योंकि इस हुक्म की दृष्टि से बड़ी भारी जिम्मेदारी मेरे सुपुर्द हुई है। अपने आपको सीधा करना और अल्लाह तआला के आदेशों की पूरी फ़रमांबर्दारी करना जहां तक इन्सान की अपनी ज़ात से सम्बन्धित है संभव है कि वह इस को पूरा करे लेकिन दूसरों को वैसा ही बनाना आसान नहीं है। इस से हमारे नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की बुलंद शान और क़ुव्वत क़ुदसी का पता लगता है अत: आप ने इस हुक्म का कैसा अनुकरण किया। सहाबा कराम रज़ि की वह पाक जमाअत तैयार की कि उनको کُنۡتُمۡ خَیۡرَ اُمَّۃٍ اُخۡرِجَتۡ لِلنَّاسِ (आले इम्रान111) कहा गया है और رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہُمۡ وَ رَضُوۡا عَنۡہُ (अल्बय्यन: 9) की आवाज़ उन को आ गई। आप की ज़िन्दगी में कोई भी मुनाफ़िक़ मदीना तय्यबा में न रहा। अत: ऐसी कामयाबी आप को मिली कि इस का उदाहरण किसी दूसरे नबी के जीवन की घटनाओं में नहीं मिलता। इस से अल्लाह तआला का उद्देश्य यह था कि बातचीत ही तक बात न रखनी चाहिए, क्योंकि अगर केवल मौखिक बात तक और दिखावा तक ही बात हो तो दूसरे लोगों में और हम में फिर अन्तर क्या होगा और दूसरों पर क्या बरतरी! तुम सिर्फ अपना व्यावहारिक आचरण दिखाओ और इस में एक ऐसी चमक हो कि दूसरों उस को क़बूल कर लें क्योंकि जब तक इस में चमक न हो कोई उस को क़बूल नहीं करता। क्या कोई इन्सान मैली कुचैली चीज़ पसन्द कर सकता है? जब तक कपड़े में एक दाग़ भी हो वह अच्छा नहीं लगता। इसी तरह जब तक तुम्हारी अंदरूनी हालत में सफ़ाई और चमक न होगी कोई ख़रीदार नहीं हो सकता। हर आदमी उत्तम चीज़ को पसंद करता है इसी तरह जब तक तुम्हारे अख़लाक़ उच्च दर्जा के न हों किसी स्थान तक नहीं पहुंच सकोगे।

(मल्फ़ूज़ात भाग 1 पृष्ठ 165 से 167 प्रकाशन 2008 क़ादियान)

जमील अहमद नासिर प्रिंटर एवं पब्लिशर ने फ़ज़्ल-ए-उमर प्रिंटिंग प्रेस क़ादियान में छपवा कर दफ़्तर अख़बार बदर से प्रकाशित किया। प्रौपराइटर - निगरान बदर बोर्ड क़ादियान

सय्यदना हज़रत अमीरुल मोमिनीन ख़लीफतुल मसीह अलख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल अज़ीज़ का यूरोप का सफर, सितम्बर अक्तूबर 2019 ई (भाग-13)

मस्जिद मुबारक का उद्घाटन आयोजन, ख़िताब हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल अज़ीज़

(रिपोर्ट: अब्दुल माजिद ताहिर, एडिशनल वकीलुत्तबशीर लंदन)

(अनुवादक: शेख मुजाहिद अहमद शास्त्री)

12 अक्तूबर 2019 ई (दिनांक हफ़्ता)

Justin Vogel साहिब जो डिस्ट्रिक्ट कौंसल आफ़ Kochersberg के प्रैज़ीडैंट हैं, ने अपने विचारों को वर्णन करते हुए कहा: शुरू में मेरी बहुत सी शंकाएं थी जब मेरे इलम में यह बात आई कि यहां मस्जिद बनने वाली है। लेकिन जब मैंने आप लोगों का यह नारा सुना कि"मुहब्बत सबसे और नफ़रत किसी से नहीं' तो मुझे यह विचार आया कि आज की दुनिया में किस तरह हो सकता है कि कोई इतना प्यार से भरा हुआ नारा लगाए और उसे स्वीकार न किया जाए।

जमाअत अहमदिया तो दहशतगर्दी और शिद्दत पसंदी के ख़िलाफ़ एक तलवार बन सकती है और अहम भूमिका अदा कर सकती है। फ्रांस में अभी तक लोग जमाअत अहमदिया को इतना तो नहीं जानते लेकिन शिद्दत पसंदी और वर्तमान की मुश्किलों के ख़िलाफ़ अहमदियत को प्रोमोट किया जाना चाहिए और इस का हल यही है।

Luc Ginzc साहिब जो शहर Kienheim के मेयर हैं ने ,अपने विचारों का इज़हार करते हुए कहा: मैं पहली बार मस्जिद में आया हूँ, अगर मस्जिद में आना यह चीज़ है तो मैं रोज़ाना मस्जिद में आऊँगा। मुझे मस्जिद में आना इतना अच्छा लगा और शान्ति मिली है कि मैं इस का वर्णन नहीं कर सकता।

Denis Babilonne साहिबा जो Flag bearers Association की प्रैज़ीडैंट हैं , ने अपने विचारों का इज़हार करते हुए कहा: जब मैंने अपने साथियों को बताया कि मस्जिद जाना है तो कुछ ने इन्कार कर दिया कि नहीं जाना। लेकिन जब हम यहां आए तो हम हैरान रह गए। यहां के लोगों ने हमारी इतनी मेहमान-नवाज़ी की और मुहब्बत का सुलूक किया। यह हम अब बाक़ियों को जा कर बताएँगे। फिर शायद वे भी एक दिन मस्जिद आ जाएं।

Martin Wonner साहिबा जो नैशनल पार्लीमैंट की मैंबर हैं ने अपने Facebook page पर यह कमंट किया: सैकूलर इज़म हमारी रियासत की बुनियाद है जो कि आज़ादी धर्म का विचार रखती है। यह मेरे विचार थे आज मह्दी Hurtigheim के उद्घाटन के अवसर पर। अगर कुछ चुने हुए हुकूमती ओहदेदार जिनके दिलोदिमाग में कुछ शंकाएं थी, आज आपके भाई चारा और प्रेम और खुले दिल का निशान देख कर वे दूर होने चाहिए थे। इस बात का मुझे कोई शक नहीं कि Hurtigheim वाले और Kochersberg वाले, जमाअत अहमदिया के इस माटो "मुहब्बत सब के लिए और नफ़रत किसी से नहीं "के साथ एक गहरा सम्बन्ध स्थापित करेंगे।

एक मेहमान औरत ने अपने विचारों को वर्णन करते हुए कहा: जब मुझे मस्जिद के उद्घाटन की दावत मिली तो मैंने पहले इंटरनैट पर तहक़ीक़ की कि यह किस किस्म के मुसलमान हैं। जब मुझे तसल्ली हुई कि यह अमन पसन्द और प्यार तथा मुहब्बत करने वाले लोग हैं तो फिर मैंने इरादा किया कि मैं ज़रूर जाऊँगी। अत: वह अपने बाग़ के अंगूर का एक बहुत बड़ा टोकरा लेकर आई। इधर आकर उसने समस्त ख़ुद्दाम और अन्य लोगों को वे अंगूर बांट दिए और साथ अपने घर की दावत भी दी कि वहां आओ और आकर और अंगूर भी ले लो। वह आज के इस आयोजन से बहुत ख़ुश थी।

एक डाक्टर साहिब अपनी पत्नी के साथ तशरीफ़ लाए जिनका सम्बन्ध इसी गांव से था। उन्होंने कहा: हमें इस क्षेत्र में आप जैसे लोगों की बहुत ज़रूरत है। हमें ख़ुशी हुई कि आप लोग यहां हैं। इस वक़्त दुनियामें जो अफ़रा-तफ़री और बदनज़्मी है इस माहौल में आपकी बहुत ज़रूरत है। आप अमन स्थापित करने वाले और मुहब्बत तथा प्यार करने वाले हैं।

एक स्थानीय अख़बार में कवरेज

यहां की एक स्थानीय अख़बार' DNA"ने (जो प्रान्त की सबसे बड़ी अख़बार है और इसका दैनिक प्रकाशन एक लाख 50 हज़ार है) मस्जिद के उद्घाटन के हवाले से ख़बर प्रकाशित करते हुए लिखा

फसलों में एक मस्जिद जो "मुहब्बत सब के लिए" पुकार रही है।

तीन साल काम के बाद और गांव के एक हिस्सा की हिचकिचाहट के बावजूद, जमाअत अहमदिया के लोग अब Hurtigheim में बनाई गई एक नई मस्जिद में नमाज़ अदा करेंगे। यह Kochensberg की पहली मस्जिद है। इस मस्जिद का उद्घाटन यक़ीनन एक तारीख़ी लम्हा है

इस गांव (Hurtigheim) में दाख़िल होते साथ ही मकई के खेतों के मध्य एक ख़ूबसूरत मस्जिद बनाने की जमाअत अहमदिया को तौफ़ीक़ मिली। लगभग 130 के क़रीब अहमदी इस जमाअत स्ट्रॉसबर्ग में रहते हैं। पहले एक दूसरे के घर में नमाज़ें अदा करते थे। अब इस मस्जिद में आकर नमाज़ अदा करेंगे। दुनिया के विभिन्न देशों, विशेषकर अल-जज़ाइर और पाकिस्तान में persecution का शिकार यह जमाअत वहां बहुत एहतियात से रहती है

2route des romains hurtigheim मैं इस जमाअत ने अपनी यहां की पहली मस्जिद और फ्रांस की दूसरी मस्जिद बनाई है। पहली मस्जिद Saint Prix में है और एक तीसरी बनाने के स्तर में है जो कि Beuvrages में है

अशफ़ाक़ रब्बानी साहिब अमीर जमाअत अहमदिया फ्रांस के अनुसार हम ने और बहुत स्थान देखे ख़रीद के क़रीब क़रीब भी पहुंच गए, परन्तु यहां के मेयर ने हमें स्वीकार किया और आज्ञा दी।

हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़ ने फ़रमाया कि हम मस्जिदें जमाअत के लोगों की ज़रूरतों और संख्या के अनुसार बनाते हैं। यहां 5 विभिन्न क़ौमियतों के अहमदी आबाद हैं और संख्या भी बढ़ रही है और हमारे लिए इस की ज़रूरत थी। लगभग 5 लाख यूरो लगे मस्जिद पर जो कि पूर्ण तौर पर जमाअत के लोगों ने अदा किए। नमाज़ का हाल 154 वर्ग मीटर है। जिसमें 250 लोगों आ सकते हैं, दो दफ़्तर हैं और एक लाइब्रेरी, और एक छोटा रिस्पशन हाल है। 60 गाड़ियों का स्थान है। साथ ही जुड़ा एक घर है जो मुरब्बी की रिहाइश है

अशफ़ाक़ रब्बानी साहिब अमीर जमाअत अहमदिया फ्रांस कहते हैं कि यह एक साधारण मस्जिद है, जिस तरह मेयर चाहते थे वैसी ही बनी है। जो माहौल का भी विचार रखती है और मानवता की रवायतों को भी बरक़रार रखे हुए है।

Hurtigheim के मेयर ने कहा कि बहुत से लोगों ने मुझे कहा और मेरे व्यवहार से मतभेद किया जो मैंने आपकी तरफ़ रखा हुआ था, जिनमें बैरूनी शहर के लोग भी शामिल हैं। फिर कहा कि यह मस्जिद हमेशा मुल्क के नियमों के अनुसार थी और रहेगी। आप लोगों को यहां 7 साल हो गए हैं, आप हमारे functions में शामिल होते हैं, सर्व धर्म कान्फ्रेंस आयोजित करते हैं, नए साल के अवसर पर सड़कों की सफाई करते हैं। आप अपने यह काम जारी रखें।

फिर कहा कि हमारे क्षेत्र में मस्जिद को स्वीकार करने में थोड़ा वक़्त लगेगा Kochersberg के सदर ने कहा कि पहले मैंने इस योजना का विरोध किया था, परन्तु जब आपका "मुहब्बत सब के लिए " वाला नारा मेरे सामने आया तो फिर मैंने सोचा कि आज की दुनिया में कैसे हो सकता है कि कोई इतना अच्छा नारा लगाए और फिर उस को स्वीकार न किया जाए। फिर उन्होंने इस अवसर को तारीख़ वाला दिन कहा।

इन सब के जवाब में ख़लीफ़ा साहिब ने फ़रमाया कि इस्लाम कहता है कि हमें अपने पड़ोसियों का ध्यान रखना चाहिए, जिस तरह हम अपने क़रीबी और माता पिता का रखते हैं। समस्त लोगों जो हमारी इस मस्जिद के क़रीब रहते हैं हमारे पड़ोसी हैं हमारा फ़र्ज़ है कि हम उनकी सेवा जारी रखें।

13 अक्तूबर 2019 ई (दिनांक इतवार)

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने सुबह 6 बजकर 30 मिनट पर मस्जिद मह्दी में तशरीफ़ ला कर नमाज़ फ़ज्र पढ़ाई। नमाज़ की अदायगी के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ अपनी रिहाइश गाह

शेष पृष्ठ 8 पर

ख़ुत्ब: जुमअ:

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया हे इब्ने औफ़ ! तुम जन्नत में रेंगते हुए दाख़िल होगे क्योंकि मालदार हो। अत: ख़ुदा के मार्ग में ख़र्च करो ताकि अपने क़दमों पर चल कर जन्नत में दाख़िल हो सको।

आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के महान बदरी सहाबा अल्लाह तआला के मार्ग में बहुत अधिक ख़र्च करने वाले हज़रत अब्दुर्ररहमान बिन औफ़ और इस्लाम और इस्लाम के संस्थापक के एक निहायत जान कुर्बान करने वाले आशिक़, बहुत अधिक मुख़लिस, बहुत अधिक फ़िदाई , उच्च स्तर के वफ़ादार और क़बीला औस के सबसे बड़े सरदार हज़रत सअद बिन मुआज़ रज़ी अल्लाह अन्हुमा के प्रशंसनीय गुणों का वर्णन।

उस्मान बिन अफ्फान रज़ि और अब्दुर्ररहमान बिन औफ़ रज़ि ज़मीन पर अल्लाह तआला के ख़ज़ानों में से दो खज़ाने हैं जो अल्लाह की प्रसन्नता के लिए ख़र्च करते हैं।

ख़ुत्ब: जुमअ: सय्यदना अमीरुल मो'मिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़, दिनांक 26 जून 2020 ई. स्थान - मस्जिद मुबारक़ इस्लामाबाद सिर्रे (यू.के)

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ
أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ۔ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ۔ اَلرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ ۔ إِيَّاكَ نَعْبُدُ وَإِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ ۔ اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ ۔ صِرَاطَ الَّذِيْنَ أَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ ۔ غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَا الضَّآلِّيْنَ

पिछले ख़ुत्बा में भी हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़ रज़ि का वर्णन किया गया था और शेष कुछ हिस्सा इस वर्णन का रहता था जो आज वर्णन करूँगा। हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़ रज़ि का दान भी प्रसिद्ध था और माली क़ुर्बानियां भी उन्होंने बहुत कीं। इस हवाला से आज अधिकतर हवाले हैं। एक रिवायत में है कि हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़ रज़ि ने वसीयत की थी कि जंग बदर में शरीक होने वाले हर एक को चार-सौ दीनार उनके तरका में से दिए जाएं। अत: इस का पालन किया गया उस वक़्त उन अस्हाब की संख्या 100 थी।

(अल-असाब: फ़ी तमीज़िस्सहाब: भाग 4 पृष्ठ 293 अब्दुर्रहमान बिन औफ़ दारुल फिक्र बैरूत 1995 ई)

रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने जब सहाबा किराम रज़ि को जंग तबूक की तैयारी के लिए आदेश दिया तो आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उमीरों को अल्लाह की राह में माल और सवारी मुहय्या करने की तहरीक भी फ़रमाई। इस पर सबसे पहले हज़रत अबू बकर रज़ि आए और अपने घर का सारा माल ले आए जो कि चार हज़ार दिरहम थे। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हज़रत अबू बकर रज़ि से पूछा कि अपने घर वालों के लिए भी कुछ छोड़ा है तो उन्होंने निवेदन किया कि घर वालों के लिए अल्लाह और उस का रसूल छोड़ आया हूँ। हज़रत उमर रज़ि अपने घर का आधा माल लेकर आए। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हज़रत उमर रज़ि से पूछा कि अपने घर वालों के लिए भी कुछ छोड़ा है तो उन्होंने निवेदन किया आधा छोड़कर आया हूँ।

हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़ रज़ि ने एक सौ औक़िया दिए। एक औक़िया चालीस दिरहम का होता है। अर्थात लगभग चार हज़ार दिरहम। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि उसमान बिन अफ्फान रज़ि और अब्दुर्रहमान बिन औफ़ रज़ि ज़मीन पर अल्लाह तआला के ख़ज़ानों में से दो खज़ाने हैं जो अल्लाह की रज़ा के लिए ख़र्च करते हैं।

(अस्सीरतुल हल्बिया भाग 3 पृष्ठ 184 जंग तबूक प्रकाशन दारुल कुतुब अल्इलमिया बैरूत 2002 ई)

(लुग़ातुल हदीस भाग 4 पृष्ठ 527 ज़ेर लफ़्ज़ "औक़िया)

हज़रत उम बक्र बिन्त मिसा रज़ि रिवायत करती हैं कि हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़ रज़ि ने हज़रत उसमान रज़ि से एक ज़मीन चालीस हज़ार दीनार के मूल्य में ख़रीदी और बनू ज़ुहरा के गरीबों और ज़रूरतमंदों और उम्माहातुल मोमिनीन में बांट दी। मिसवर बिन मख़रमा कहते हैं कि जब मैंने हज़रत आयशा रज़ी अल्लाह तआला अन्हा को इस ज़मीन में से उनका हिस्सा दिया तो हज़रत आयशा रज़ि ने पूछा कि यह किस ने भेजा है? मैंने कहा अब्दुर्रहमान बिन औफ़ रज़ि ने। तो हज़रत आयशा रज़ि ने फ़रमाया कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया है कि मेरे बाद तुम से हुस्ने सुलूक वही करेगा जो निहायत दर्जा सब्र करने वाला होगा। फिर आप ने दुआ दी कि हे अल्लाह अब्दुर्रहमान बिन औफ़ रज़ि को जन्नत के चश्मा सलसबील का पानी पिला।

(अत्तबकातुल कुबरा ले-इब्ने सअद भाग 3 पृष्ठ 98 अब्दुर्रहमान बिन औफ़ दारुल कुतुब अल्इलमिया बैरूत 1990 ई)

(रोशन सितारे लेखक ग़ुलाम बारी सैफ़ साहिब भाग 2 पृष्ठ 119)

एक रिवायत में है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया मेरे बाद मेरे मेरे घर वालो की ख़बरगीरी करने वाला शख़्स सच्चा और नेक ही होगा। अत: अब्दुर्रहमान बिन औफ़ रज़ि उम्माहातुल मोमिनीन रज़ि को उनकी सवारियों समेत लेकर निकलते। उन्हें हज कराते और उनके कुजावों पर पर्दे डालते और पड़ाव के लिए ऐसी घाटियाँ चुनते जिनमें गुज़रगाह न होती ताकि बेपर्दगी न हो और आज़ादी से वे पड़ाव कर सकें।

(अल-असाब: फ़ी तमीज़िस्सहाब: भाग 4 पृष्ठ 292 अब्दुर्रहमान बिन औफ़ दारुल फिक्र बैरूत 1995 ई)

एक बार मदीना में खाद्य पदार्थों का अक़ाल था। उसी समय में शाम से सात सौ ऊंटों पर आधारित गंदुम, आटा और खाने पीने की चीज़ों का क़ाफ़िला मदीना आया जिससे मदीने में हर तरफ़ शोर मच गया। हज़रत आयशा रज़ि ने पूछा यह शोर कैसा है?निवेदन किया कि हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़ रज़ि का सात सौ ऊंटों का क़ाफ़िला आया है जिस पर गेंहू आटा और खाने की चीज़ें लदी हुई हैं। उम्मुल मोमिनीन हज़रत आयशा रज़ी अल्लाह तआला अन्हा ने फ़रमाया कि मैंने नबी अकरम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से सुना है, आप फ़रमाते थे कि अब्दुर्रहमान रज़ि जन्नत में घुटनों के बल दाख़िल होगा। उम्मुल मोमिनीन हज़रत आयशा रज़ि की यह रिवायत जब हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़ रज़ि को पहुंची तो वह आप की सेवा में हाज़िर हुए और कहा कि माँ! मैं आप को गवाह ठहराता हूँ कि यह सारा खाना और खाने पीने की चीज़ें और ये सब सवारियां और ऊंटों के पालान तक मैंने ख़ुदा की राह में दे दिए ताकि मैं चल कर जन्नत में जाऊं।

(उसदुल ग़ाबह फ़ी मअरफतिस्सहाबा भाग 3 पृष्ठ 478 अब्दुर्रहमान बिन औफ़ दारुल कुतुब अल्इलमिया बैरूत)

(रोशन सितारे ग़ुलाम बारी सैफ़ साहिब भाग 2 पृष्ठ 110-111)

हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़ रज़ि की अल्लाह के मार्ग में खर्च करने की बहुत सारी घटनाएं सहाबा के हालात जमा करने वालों ने जमा कीं हैं। उसदुल ग़ाबह में लिखा है कि अब्दुर्रहमान बिन औफ़ रज़ि ख़ुदा की राह में ख़र्च करने वाले थे। एक-बार उन्होंने एक दिन में तीस ग़ुलाम आज़ाद किए।

(रोशन सितारे ग़ुलाम बारी सैफ़ साहिब भाग 2 पृष्ठ 110)

एक बार हज़रत उमर रज़ि को कुछ रुपए की ज़रूरत थी। उन्होंने हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़ रज़ि से क़र्ज़ मांगा। उन्होंने कहा हे अमीरुल-मोमनीन आप मुझ से ही क्यों मांगते हैं। आप बैयतुल माल से भी क़र्ज़ ले सकते हैं और उस्मान रज़ि या किसी और सामर्थ्य वाले से भी। हज़रत उमर रज़ि ने फ़रमाया ऐसा इसलिए

करता हूँ कि शायद बैयतुल माल को रक़म वापस करना भूल जाऊं और किसी दूसरे से लूं तो शायद वह लिहाज़ या किसी और वजह से मुझसे रक़म की वापसी की मांग न करे और मैं भूल जाऊं लेकिन तुम अपनी रक़म मुझसे मांग कर भी ज़रूर वापस ले लोगे।

(अश्रा मुबश्रा बशीर साजिद पृष्ठ 882 अल्बदर पब्लेक्शनज़ लाहौर) आपस में बे-तकल्लुफ़ी की यह अवस्था थी और जब उनको ज़रूरत होती तो वह ले भी लिया करते थे, ले भी सकते थे।

हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़ रज़ि के बेटे इब्राहीम अपने पिता से रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया हे इब्ने औफ़ तुम जन्नत में रेंगते हुए दाख़िल होगे क्योंकि मालदार हो। अत: ख़ुदा की राह में ख़र्च करो ताकि अपने क़दमों पर चल कर जन्नत में दाख़िल हो सको। यह जो हज़रत आयशा वाली पहली रिवायत है इस से भी यह मिलती जुलती रिवायत है। तो हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़ रज़ि ने निवेदन किया कि हे रसूलुल्लाह ख़ुदा की राह में क्या ख़र्च करूँ? फ़रमाया जो मौजूद है ख़र्च करो। निवेदन किया हे रसूलुल्लाह क्या सारा? फ़रमाया हाँ। हज़रत अब्दुर्रहमान रज़ि यह इरादा कर के निकले कि सारा माल ख़ुदा की राह में दे दूँगा। थोड़ी देर बाद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उन्हें बुलाया और फ़रमाया कि तुम्हारे जाने के बाद जिब्राईल आए। उन्होंने कहा कि अब्दुर्रहमान को कहो कि मेहमान-नवाज़ी करे। मिस्कीन को खाना खिलाए। मांगने वाले को दे और दूसरों की तुलना में रिश्तेदारों पर पहले ख़र्च करे। जब वह ऐसा करेगा तो उस का माल पवित्र हो जाएगा।

(अत्तबकातुल कुबरा ले इब्ने सअद भाग 3 पृष्ठ 97 मिन बनी ज़हर बिन किलाब दारुल कुतुब अल्इलमिया बैरूत 1990 ई)

(रोशन सितारे ग़ुलाम बारी सैफ़ साहिब पृष्ठ 112)

और पवित्र माल , अल्लाह तआला की राह में ऐसा ख़र्च किया हुआ माल जो है इस से फिर घुटनों के बल नहीं बल्कि आप ने फ़रमाया कि पांव पर खड़े हो कर जन्नत में जाओगे। नतीजा आगे यही निकलता है। एक-बार अपना आधा माल जो चार हज़ार दिरहम था ख़ुदा की राह में दे दिया। फिर एक बार चालीस हज़ार दिरहम। फिर एक-बार चालीस हज़ार दीनार ख़ुदा की राह में सदक़ा दिया। एक बार पाँच सौ घोड़े ख़ुदा की राह में वक़्फ़ किए। फिर दूसरी बार पाँच सौ ऊंट ख़ुदा की राह में दे दिए।

(उसदुल ग़ाबह फ़ी मअरफतिस्सहाबा भाग 3 पृष्ठ 478 अब्दुर्रहमान बिन औफ़ दारुल कुतुब अल्इलमिया बैरूत)

(रोशन सितारे ग़ुलाम बारी सैफ़ साहिब भाग 2 पृष्ठ 111)

हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़ रज़ि के बेटे अबू सलमा रिवायत करते हैं कि हमारे अब्बा ने उम्हातुल मोमेनीन रज़ि के हक़ में एक बाग़ीचे की वसीयत फ़रमाई। इस बाग़ीचे की क़ीमत चार लाख दिरहम थी

(रोशन सितारे ग़ुलाम बारी सैफ़ साहिब भाग 2 पृष्ठ 119)

हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़ रज़ि ने ख़ुदा के मार्ग में देने के लिए पचास हज़ार दीनार की वसीयत की थी। तर्के में एक हज़ार ऊंट, तीन हज़ार बकरीयां, सौ घोड़े थे जो बक़ीअ (नामक स्थान) में चरते थे। जुर फजू मदीना से तीन मील उत्तर की तरफ एक जगह है जहां हज़रत उमर रज़ि की कुछ जायदाद थी। इस स्थान पर बीस पानी खींचने वाले ऊंटों से आप खेती करते थे और इसी से घर वालों के लिए साल भर का खाना मिल जाता था। एक रिवायत में है कि तर्के में इतना सोना छोड़ा जो कुल्हाड़ियों से काटा गया यहां तक कि लोगों के हाथों में इस से छाले पड़ गए।

(अत्तबकातुल कुबरा ले इब्ने सअद भाग 3 पृष्ठ 100-101अब्दुर्रहमान बिन औफ़ दारुल कुतुब अल्इलमिया बैरूत 1990 ई)(रोशन सितारे ग़ुलाम बारी सैफ़ साहिब भाग 2 पृष्ठ 118)(फ़र्हंग सीरत पृष्ठ 87 ज़व्वार एकेडेमी कराची 2003 ई)

हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़ रज़ि का देहान्त 31 हिज्री में हुआ। कुछ के निकट बत्तीस हिज्री में हुआ। बहत्तर (72) वर्ष ज़िन्दा रहे। कुछ के निकट अठहत्तर बरस और जन्नतुल बक़ी में दफ़न हुए। हज़रत उसमान रज़ि ने उनकी नमाज़ जनाज़ा पढ़ाई। एक कथन के अनुसार हज़रत ज़ुबैर बिन अवाम रज़ि ने जनाज़ा पढ़ाया

(अल-असाबः फ़ी तमीज़िस्सहाबः भाग 4 पृष्ठ 293 अब्दुर्रहमान बिन औफ़ दारुल फिक्र बैरूत 1995 ई)(अत्तबकातुल कुबरा ले इब्ने सअद भाग 3 पृष्ठ 100अब्दुर्रहमान बिन औफ़ दारुल कुतुब अल्इलमिया बैरूत 1990 ई)

हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़ रज़ि के देहान्त पर चारपाई के पास खड़े हो कर हज़रत सअद बिन मालिक रज़ि ने कहा। "वा जबलाह" कि हाय अफ़सोस पहाड़ जैसी शख़्सियत उठ गई। हज़रत अली रज़ि ने फ़रमाया इब्ने औफ़ इस दुनिया से विदा हो गए। उन्होंने दुनिया के चश्मे से साफ़ पानी पिया और गदला छोड़ दिया। या यूं कह लीजिए कि इब्ने औफ़ ने अच्छा ज़माना पाया और बुरे वक़्त से पहले चले गए।

(रोशन सितारे ग़ुलाम बारी सैफ़ साहिब भाग 2 पृष्ठ 117)

हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़ रज़ि ने अपने पीछे रहने वालों में तीन बीवियां छोड़ीं। हर एक बीवी को उस के आठवें हिस्सा में से अस्सी हज़ार दिरहम दिए गए जबकि एक दूसरी रिवायत में आपकी चार बीवियां थीं और हर एक के हिस्से में अस्सी हज़ार आए।

(अत्तबकातुल कुबरा ले इब्ने सअद भाग 3 पृष्ठ 101अब्दुर्रहमान बिन औफ़ दारुल कुतुब अल्इलमिया बैरूत 1990 ई)

अब अगला ज़िक्र जिन सहाबी का है उनका नाम हज़रत सअद बिन मुआज़ रज़ि है। हज़रत सअद बिन मुआज़ रज़ि का सम्बन्ध अन्सार के क़बीला औस की शाख़ बनू अब्दुल अशहल से था और आप क़बीला औस के सरदार थे। आप के पिता का नाम मआज़ बिन नोमान था और माता का नाम कब्शा बिन्त राफ़िअ था जो सहाबिया रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम थीं। हज़रत सअद बिन मुआज़ रज़ि की कुनिय्यत अबू अमरो थी। हज़रत सअद बिन मुआज़ रज़ि की बीवी का नाम हिन्द बिन्त सिमाक रज़ि था जो सहाबिया थीं। हज़रत हिन्द रज़ि से हज़रत सअद बिन मुआज़ रज़ि की औलाद में अमरो और अब्दुल्लाह थे। हज़रत सअद बिन मुआज़ रज़ि और हज़रत उसैद बिन हुज़ैर ने हज़रत मुसअब बिन उमेर रज़ि के हाथ पर इस्लाम स्वीकार किया और हज़रत मुसअब बिन उमैर रज़ि बैअत उक़बा सानिया में शामिल होने वाले सत्तर सहाबा से पहले मदीना आ गए थे। उनको मदीना भिजवाया गया था। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के आदेश के अनुसार लोगों को इस्लाम की तरफ़ बुलाते और उन्हें क़ुरआन पढ़ कर सुनाते। जब हज़रत सअद बिन मुआज़ रज़ि ने इस्लाम स्वाकीर किया तो बनू अब्दे अशहल से कहा कि मुझ पर हराम है कि मैं तुम्हारे मर्दों और औरतों से वार्तालाप करूँ यहां तक कि तुम इस्लाम स्वीकार कर लो। अत: इस क़बीला के सब लोगों ने इस्लाम स्वीकार कर लिया और अन्सार में से बनू अब्दे अशहल का घराना वह पहला घराना था जिसके सब मर्दों और औरतों ने इस्लाम स्वीकार किया।

हज़रत सअद बिन मुआज़ रज़ि हज़रत मुसअब बिन उमैर रज़ि और हज़रत असद बिन ज़ुरारा रज़ि को अपने घर ले आए। मुसअब बिन उमैर रज़ि और असद बिन ज़ुरारह रज़ि दोनों आदमियों को ले आए। फिर वे दोनों हज़रत सअद बिन मुआज़ रज़ि के घर में ही लोगों को इस्लाम की दावत दिया करते थे। हज़रत सअद बिन मुआज़ रज़ि और हज़रत उस बिन ज़ुरारह रज़े ख़लेरे भाई थे और हज़रत सअद बिन मुआज़ रज़ि और हज़रत उसैद बिन हुज़ैर रज़ि ने बनू अब्दुल अशहल के बुत तोड़े थे। एक ही ख़ानदान के थे। इसलिए जब सारा क़बीला मुसलमान हो गया तो उन्होंने उनके बुत तोड़े। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हज़रत सअद का भाईचारा हज़रत सअद बिन अबी वकास रज़ि से किया था। एक दूसरी रिवायत के अनुसार आपका भाईचारा हज़रत अबू उबैदा बिन अलजर्राह रज़ि से था।

(अत्तबकातुल कुबरा ले इब्ने सअद भाग 3 पृष्ठ 320-321'' सअद बिन मुआज़' दारुल कुतुब अल्इलमिया बैरूत 1990 ई)(उसदुल ग़ाबह फ़ी मअरफतिस्सहाबा भाग 2 पृष्ठ 461 '' सअद बिन मुआज़' दारुल कुतुब अल्इलमिया बैरूत 2003 ई)

(अल-असाबः फ़ी तमीज़िस्सहाबः ले इब्ने हिज्र असकलानी भाग 03 पृष्ठ 70 '' सअद बिन मुआज़' दारुल कुतुब अल्इलमिया बैरूत 1995 ई)

हज़रत सअद बिन मुआज़ रज़ि के इस्लाम स्वीकार करने की घटना का वर्णन करते हुए हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब रज़ि ने सीरत ख़ातमन्नबिय्यीन में जो लिखा है वह यह है। लिखते हैं कि

बैअत उक़बा ऊला के बाद मक्का से विदा होते हुए इन बारह नौ मुस्लिमीन ने निवेदन किया कि कोई इस्लामी मुअल्लिम हमारे साथ भेजा जाए ताकि वह हमें वहां धर्म सिखाए हमें इस्लाम की शिक्षा दे और हमारे मुशरिक भाईयों को इस्लाम की तब्लीग़ करे। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने मुसअब बिन उमैर रज़ि को जो क़बीला अब्दुल दार के एक निहायत मुख़लिस नौजवान थे उनके साथ रवाना कर दिया। हज़रत मुसअब बिन उमैर रज़ि को भेज दिया। इस्लामी मुबल्लिग़ इन दिनों में क़ारी या मुकरी कहलाते थे क्योंकि उनका काम अधिकतर क़ुरआन शरीफ़ सुनाना था क्योंकि यही तब्लीग़ इस्लाम का बेहतरीन माध्यम था। अत: मुसअब भी जब मुबल्लिग़ बन के यसरब में गए तो इसी कारण से मुकरी के नाम से मशहूर हो गए।

मुसअब बिन उमैर रज़ि ने मदीना पहुंच कर असअद बिन ज़ुरार्ह रज़ि के मकान पर निवास किया। शायद उस का कुछ हिस्सा मैं मुसअब बिन उमैर रज़ि के ज़िक्र में भी बता चुका हूँ। बहरहाल यहां भी यह वर्णन है। उन्होंने असद बिन ज़ुरारह रज़ि के मकान पर निवास किया जो मदीना में सबसे पहले मुसलमान थे। यह असअद बिन ज़ुरारह रज़ि वैसे भी एक निहायत मुख़लिस और प्रभावी बुज़ुर्ग थे और इसी मकान को अपना तब्लीग़ी मर्कज़ बनाया और अपने फ़रायज़ की अदायगी में लीन हो गए। और चूँकि मदीना में मुसलमानों को सामूहिक ज़िन्दगी नसीब थी और थी भी तुलनात्मक रूप से अमन की ज़िन्दगी, इसलिए असद बिन ज़ुरारह रज़ि के परामर्श पर आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने मुसअब बिन उमैर रज़ि को जुम्अ: की नमाज़ की हिदायत फ़रमाई। इस तरह मुसलमानों की सामाजी ज़िन्दगी का आरम्भ हुआ और अल्लाह तआला का ऐसा फ़ज़ल हुआ कि थोड़े ही समय में मदीना में घर-घर इस्लाम की चर्चा होने लगा। जुम्अ: बाक़ायदा वहां पढ़ा जाने लगा और इस्लाम की चर्चा भी होने लगा और औस और ख़ज़रज बड़ी तेज़ी के साथ मुसलमान होने शुरू हो गए। कई बार तो एक क़बीले का क़बीला एक दिन में ही सब का सब मुसलमान हो गया। अत: बनू अब्दुल अशहल का क़बीला भी इसी तरह एक ही वक़्त में इकट्ठा मुसलमान हुआ था। यह क़बीला अन्सार के मशहूर क़बीला औस का एक बड़ा हिस्सा था और इस के रईस का नाम सअद बिन मुआज़ रज़ि था जो सिर्फ क़बीला बनी अब्दुल अशहल के ही बड़े रईस नहीं थे बल्कि सारे क़बीला औस के सरदार थे।

जब मदीना में इस्लाम की चर्चा हुआ तो सअद बिन मुआज़ रज़ि को यह बुरा मालूम हुआ और उन्होंने उसे रोकना चाहा। जब सअद बिन मुआज़ रज़ि मुसलमान नहीं हुए थे और जब इस्लाम मदीना में फैलना शुरू हुआ यह क़बीले के रईस थे तो उनको बहुत बुरा लगा। परन्तु असद बिन ज़ुरार्ह रज़ि से उनकी बहुत क़रीब की रिश्तेदारी थी एक दूसरे के ख़लेरे भाई भाई थे और असद मुसलमान हो चुके थे इसलिए सअद बिन मुआज़ रज़ि ख़ुद सीधा दख़ल देते हुए झिजकते थे। रुकते थे कि आपस में रिश्तेदारियों में कोई कड़वाहट पैदा न हो जाए। अत: उन्होंने अपने एक दूसरे रिश्तेदार उसैद बिन अलहज़ीर से कहा कि असद बिन ज़ुरारा रज़ि की वजह से मुझे तो कुछ शर्म है परन्तु तुम जाकर मुसअब को रोक दो कि हमारे लोगों में यह बेदीनी न फैलाएं। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने मक्का से जो मुबल्लिग़ भेजे थे उनको जा कर रोको कि यह धर्म हमारे शहर में न फैलाएं और असद रज़ि से भी कह दो कि यह तरीक़ा अच्छा नहीं है। उसैद जो थे वह क़बीला बनू अशहल के बड़े सरदारों में से थे। यहां तक कि उनके पिता जंग बुआस में सारे औस का सरदार रह चुके थे। जंग बुआस जो है इस का पहले भी ज़िक्र हो चुका है कि यह जंग इस्लाम से पहले मदीने के दो क़बीलों औस और ख़ज़रज के मध्य हुई थी।

बहरहाल सअद बिन मुआज़ रज़ि के बाद उसैद बिन हुज़ैर रज़ि का अपने क़बीला पर बहुत प्रभाव था। अत: सअद रज़ि के कहने पर वह मुसअब बिन उमैर रज़ि और असद बिन ज़रारह रज़ि के पास गए और मुसअब रज़ि से मुख़ातिब हो कर ग़ुस्सा के अन्दाज़ में कहा। तुम क्यों हमारे आदमियों को धर्म से विमुख करते फिरते हो। इससे रुक जाओ वर्ना अच्छा नहीं होगा। इससे पहले कि मुसअब रज़ि कुछ जवाब देते उसैद रज़ि ने धीरे से मुसअब रज़ि से कहा कि यह अपने क़बीला के एक प्रभाव वाले रईस हैं उनसे बहुत नर्मी और मुहब्बत से बात करना। अत: मुसअब रज़ि ने बड़े अदब और मुहब्बत के रंग में उसैद रज़ि से कहा कि आप नाराज़ न हों बल्कि मेहरबानी फ़र्मा कर थोड़ी देर तशरीफ़ रखें, ठंडे दिल से हमारी बात सुन लें और इस के बाद कोई राय क़ायम करें। उसैद रज़ि इस बात को उचित समझ कर बैठ गए और मुसअब रज़ि ने उन्हें क़ुरआन शरीफ़ सुनाया और बड़ी मुहब्बत के रंग में इस्लामी तालीम से परिचित किया। उसैद रज़ि पर इतना प्रभाव हुआ कि वहीं मुसलमान हो गए और फिर कहने लगे कि मेरे पीछे एक ऐसा आदमी है जो अगर ईमान ले आया तो हमारा सारा क़बीला मुसलमान हो जाएगा जिसने मुझे भेजा है। तुम ठहरो मैं उसे भी यहां भेजता हूँ। यह कह कर उसैद उठकर चले गए और किसी बहाना से सअद बिन मुआज़ रज़ि को मुसअब बिन उमैर रज़ि और असद बिन ज़ुरारा रज़ि की तरफ़ भिजवा दिया। सअद बिन मुआज़ रज़ि आए और बड़े क्रोधित हो कर असद बिन ज़ुरारा रज़ि से कहने लगे कि असअद! तुम अपनी रिश्तेदारी का नाजायज़ लाभ उठा रहे हो। मेरी जो तुम से रिश्तेदारी है इसका नाजायज़ फ़ायदा उठा रहे हो और यह ठीक नहीं है। इस पर मुसअब रज़ि ने जो मुबिल्लग़ थे और मक्का से आए हुए थे, इसी तरह नर्मी और मुहब्बत के साथ उनको ठंडा किया। हज़रत मुसअब रज़ि ने बड़ी मुहब्बत से उनसे बात की। उन्होंने कहा कि आप थोड़ी देर तशरीफ़ रखकर मेरी बात सुन लें और फिर अगर इस में कोई चीज़ ऐतराज़ के योग्य हो तो बे-शक रद्द कर दें। सअद ने कहा हाँ यह मांग उचित है और अपना नेज़ा टेक कर बैठ गए। नेज़ा उनके हाथ में था और अक्सर जो थे वह इस तरह ही हथियार ले के फिरा करते थे। और मुसअब रज़ि ने इसी तरह पहले क़ुरआन शरीफ़ की तिलावत की और फिर अपने दिलकश रंग में इस्लामी उसूल की व्याख्या की। हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब रज़ि लिखते हैं अभी ज़्यादा देर नहीं गुज़री थी कि यह बुत भी राम था। अर्थात दिल उनका नर्म हो गया और उन पर भी इस्लाम की शिक्षा का असर हो गया। अत: सअद रज़ि ने मस्नून तरीक़ पर ग़ुसल कर के कलिमा शहादत पढ़ लिया और फिर उस के बाद सअद रज़ि और उसैद बिन हुज़ैर रज़ि दोनों मिलकर अपने क़बीला वालों की तरफ़ गए और सअद रज़ि ने उनसे अपने क़बीला वालों से विशेष अरबी अन्दाज़ में पूछा कि हे बनी अब्दुल अश्हल तुम मुझे कैसा जानते हो? सबने एक ज़बान हो कर कहा कि आप हमारे सरदार और सरदार इब्ने सरदार हैं और आपकी बात पर हमें पूर्ण भरोसा है। सअद रज़ि ने कहा तो फिर मेरे साथ तुम्हारा कोई सम्बन्ध नहीं जब तक तुम अल्लाह और उस के रसूल पर ईमान न लाओ। उसी समय तब्लीग़ भी शुरू कर दी। उस के बाद सअद रज़ि ने उन्हें इस्लाम के उसूल समझाए अर्थात अपने क़बीला वालों को इस्लाम के उसूल समझाए। तालीम दी और कहते हैं कि अभी उस दिन पर शाम नहीं आई थी और दिन ख़त्म नहीं हुआ था कि शाम से पहले पहले ही सारा क़बीला मुसलमान हो गया और सअद रज़ि और उसैद रज़ि ने ख़ुद अपने हाथों से अपनी क़ौम के बुत निकाल कर तोड़े।

सअद बिन मुआज़ रज़ि और उसैद बिन हुज़ैर रज़ि जो उस दिन मुसलमान हुए थे दोनों प्रमुख सहाबा में गिने जाते हैं और अन्सार में तो हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब रज़ि लिखते हैं कि इस में शक नहीं उनका बहुत ही ऊंचा स्थान था। कोई शक नहीं इस में कि उनका बहुत बुलंद स्थान था। विशेष रूप से सअद बिन मुआज़ रज़ि को तो मदीना के अन्सार में वह पोज़ीशन हासिल थी जो मुहाजिरीन मक्का में हज़रत अबूबकर रज़ि को हासिल थी। यह नौजवान निहायत दर्जा के मुख़लिस, निहायत दर्जा के वफ़ादार और इस्लाम और इस्लाम के संस्थापक का एक निहायत जान कुर्बान करने वाला आशिक़ निकला और चूँकि वह अपने क़बीला का बड़ा सरदार भी था और निहायत ज़हीन था। इस्लाम में उसे वह पोज़ीशन हासिल हुई जो सिर्फ ख़ास बल्कि विशेष सहाबा को हासिल थी, बहुत ही ख़ास सहाबा को वह प्राप्त थी और निसन्देह उस की जवानी की मौत पर आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का यह इरशाद कि सअद रज़ि की मौत पर तो रहमान का अर्श भी हरकत में आगया है एक गहरी सच्चाई पर आधारित था। उनकी जवानी में मौत हो गई थी।

अत: इस तरह तेज़ी के साथ औस और ख़ज़रज में इस्लाम फैलता गया। यहूद ख़ौफ़ भरी आँख के साथ यह नज़ारा देखते थे और दिल ही दिल में यह कहते थे कि ख़ुदा जाने क्या होने वाला है।

(उद्धरित सीरत ख़ातमन्नबिय्यीन हज़रत साहिबज़ादा मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब रज़ि एम-ए पृष्ठ 224 से 227) (फ़र्हंग सीरत पृष्ठ 60 ज़व्वार एकेडेमी कराची 2003 ई)

हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब रज़ि ने किताब सीरत ख़ातमन्नबय्यीन में और अधिक एक जगह लिखा है कि अभी आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को मदीना में तशरीफ़ लाए ज़्यादा समय नहीं गुज़रा था कि क़ुरैश मक्का की तरफ़ से अब्दुल्लाह बिन अबी बिन सलूल रईस क़बीला ख़ज़रज और उस के मुशरिक साथियों के नाम , मक्का वालों की तरफ़ से एक कठोरता का ख़त आया कि तुम लोग मुहम्मद(सल्लल्लाहो वसल्लम) की पनाह से अलग हो जाओ वर्ना तुम्हारी ख़ैर नहीं है। अत: इस ख़त के शब्द यह थे कि तुम लोगों ने हमारे आदमी मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को पनाह दी है और हम ख़ुदा की क़सम खा कर कहते हैं कि या तो तुम उस का साथ छोड़कर उस के ख़िलाफ़ जंग करो या कम से कम उसे अपने शहर से निकाल दो वर्ना हम अपना सारा लश्कर लेकर तुम पर हमला कर देंगे और तुम्हारे सारे मर्दों को कत्ल कर देंगे और तुम्हारी औरतों पर क़ब्ज़ा करके उन्हें अपने लिए जायज़ कर लेंगे।

जब मदीना में यह ख़त पहुंचा तो अब्दुल्लाह और उस के साथी जो पहले से ही दिल में इस्लाम के सख़्त दुश्मन हो रहे थे। उनके अन्दर आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के ख़िलाफ़, इस्लाम के ख़िलाफ़ द्वेष पनप रहे थे। उन्होंने आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से जंग करने के लिए तैयारी शुरू कर दी, तैयार हो गए। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को जब यह सूचना मिली तो आप फ़ौरन उन लोगों से मिले और उन लोगों के पास गए। उनको, अब्दुल्लाह बिन अबी बिन सलूल और इस के साथियों को समझाया कि मेरे साथ जंग करने में तुम्हारा अपना ही नुक़्सान है क्योंकि तुम्हारे ही भाई तुम्हारे मुक़ाबला में होंगे। ये लोग जो

मुसलमान हुए हैं ये तुम्हारे क़बीला के लोग हैं, तुम्हारे शहर के लोग हैं और जब जंग करोगे तो यही लोग मेरी तरफ़ से तुम्हारे ख़िलाफ़ लड़ेंगे। अर्थात औस और ख़ज़रज के मुसलमानों ने बहरहाल मेरा साथ देना है। आप ने उन्हें यह फ़रमाया । फिर आप ने फ़रमाया अत: मेरे साथ जंग करने के सिर्फ यह अर्थ होंगे कि तुम लोग अपने ही बेटों और भाईयों और बापों के ख़िलाफ़ तलवार उठाओ। अब तुम ख़ुद सोच लो कि यह ठीक है। अब्दुल्लाह और उस के साथियों को जिनके दिलों में अभी तक जंग बुआस की तबाही की याद ताज़ा थी। आपस में यह लड़ते रहे थे। इस जंग से बड़ी तबाही फैली थी। उनको यह बात समझ आ गई कि दोबारा आपस में ही लड़ना पड़ेगा और वह इस इरादे से रुक गए।

जब क़ुरैश को इस चेष्टा में असफलता हुई तो उन्होंने कुछ अर्से के बाद इसी किस्म का एक ख़त मदीना के यहूद के नाम भी भेजा। दरअसल कुफ़्फ़ार मक्का का उद्देश्य यह था कि जिस तरह भी हो इस्लाम के नाम को संसार से मिटा दिया जाए। दुनिया से इस का नाम ही ख़त्म कर दिया जाए। मुसलमान उनके अत्याचारों से तंग आकर हब्शा गए। जब हब्शा की पहली हिजरत हुई थी तो वहां उन्होंने , काफ़िरों ने उनका पीछा किया। तो हमेशा पहले दिन से ही यही कोशिश की थी और इस बात की कोशिश में अपनी इंतिहाई ताक़त सिर्फ कर दी कि नेक दिल नज्जाशी इन पीड़ित वतन से निकलने वालों को मक्का वालों के हवाले कर दे। फिर आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम मक्का से हिजरत कर के जब मदीना आ गए तो क़ुरैश ने आपका पीछा करके आप को गिरफ़्तार कर लेने में भी कोई कोशिश बाक़ी नहीं रखी। पूरी कोशिश की। हर अवसर पर उन्होंने कोशिश की कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को या इस्लाम को किसी तरह ख़त्म किया जाए और अब जब उन्हें यह पता चला कि आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम और आप के अस्हाब मदीना पहुंच गए हैं और वहां इस्लाम तेज़ी के साथ फैल रहा है तो उन्हों ने यह कठोर ख़त भेज कर मदीना वालों को आप के साथ जंग करके इस्लाम को मलियामेट कर देने या आप की पनाह से हट कर आप को मदीना से निकाल देने की तहरीक की। हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब रज़ि लिखते हैं कि यह ख़त जो लिखा था तो क़ुरैश के इस ख़त से अरब की इस रस्म पर भी प्रकाश पड़ता है कि वह अपनी जंगों में अपने दुश्मनों के साथ दुश्मन के सारे मर्दों को क़त्ल करके उनकी औरतों पर क़ब्ज़ा कर लिया करते थे और फिर उनको अपने लिए जायज़ समझते थे और इसी तरह यह कि मुसलमानों के बारे में उनके इरादे इस से भी ज़्यादा ख़तरनाक थे क्योंकि जब यह सज़ा उन्होंने मुसलमानों के पनाह देने वालों को देनी थी और यह उनके लिए चुना थी कि हम तुम्हारे मर्दों को क़तल कर देंगे और औरतों को अपने लिए जायज़ कर लेंगे तो ख़ुद मुसलमानों के लिए तो निसन्देह वह इस से भी ज़्यादा सख़्त इरादे रखते होंगे। बहरहाल क़ुरैश मक्का का यह ख़त उनके किसी अस्थायी जोश का नतीजा नहीं था बल्कि स्थायी तौर पर इस बात का इरादा कर चुके थे कि मुसलमानों को चैन से नहीं बैठने देना। उनको चैन नहीं लेने देंगे और इस्लाम को दुनिया से मिटा कर छोड़ेंगे। अत: हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब रज़ि ने अपनी किताब में एक घटना लिखी है।

लिखते हैं कि यह तारीख़ी घटना मक्का के ख़ूनी इरादों का पता दे रही है। वह घटना इस तरह है जिसकी बुख़ारी में रिवायत आती है कि हिजरत के कुछ समय बाद सअद बिन मुआज़ रज़ि जो क़बीला औस के बड़े सरदार थे और मुसलमान हो चुके थे उमरा के ख़्याल से मक्का गए और अपने जाहिलीयत के ज़माना के दोस्त, पुराने ज़माना में, जाहिलियत के ज़माना में उमय्या बिन ख़लफ रईस मक्का उनका दोस्त था। वह उस के पास जा के ठहरे। चूँकि वह जानते थे कि अगर वह अकेले उमरा अदा करने, तवाफ़ करने गए तो मक्का वाले उनके साथ ज़रूर छेड़-छाड़ करेंगे। इसलिए उन्होंने फ़ित्ना से बचने के लिए उमय्या से कहा कि मैं काबा का तवाफ़ करना चाहता हूँ। तुम मेरे साथ हो कर ऐसे वक़्त में मुझे तवाफ़ करा दो जबकि मैं एकान्त में अमन के साथ इस काम से फ़ारिग़ हो कर अपने वतन वापस चला जाऊं। अत: उमय्या बिन ख़लफ दोपहर के समय जबकि लोग प्राय अपने-अपने घरों में होते हैं सअद को लेकर काबा के पास पहुंचा लेकिन संयोग ऐसा हुआ कि ठीक उसी समय अबुजहल भी वहां आ निकला और जूंही उस की नज़र सअद रज़ि पर पड़ी उस की आँखों में ख़ून उतर आया परन्तु अपने ग़ुस्सा को दबा कर वह उमय्या से यूं कहने लगा हे सफ़वान! यह तुम्हारे साथ कौन शख़्स है? उमय्या ने कहा कि यह सअद बिन मुआज़ रज़ि रईस औस है। इस पर अबुजहल बहुत क्रोधित हो कर सअद रज़ि से मुख़ातब हुआ कि क्या तुम लोग ये ख़्याल करते हो कि इस मुर्तद (नऊज़-बिल्लाह) मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को पनाह देने के बाद तुम लोग अमन के साथ काबा का तवाफ़ कर सकोगे और तुम यह कल्पना करते हो कि तुम उस की अर्थात आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की सुरक्षा और सहायता की शक्ति रखते हो? कहने लगा कि ख़ुदा की क़सम अगर इस वक़्त तेरे साथ अबू सफ़वान न होता तू अपने घरवालों के पास बच कर न जाता सअद बिन मुआज़ रज़ि फ़ित्ना से बचते थे परन्तु उन की रगों में भी रियासत का ख़ून था और दिल में ईमानी ग़ैरत जोश मार रही थी। कड़क कर बोले कि अल्लाह की कसम अगर तुम ने हम को काबा से रोका तो याद रखो कि फिर तुम्हें भी तुम्हारे शाम के रास्ते पर अमन नहीं मिल सकेगा। हम भी रास्ते में बैठे हैं हम भी तुम्हारे ख़िलाफ़ बहुत कुछ करेंगे। उमय्या ने उनकी जो ये बात सुनी और इसी तरह उनका ग़ुस्सा भी देखा तो कहने लगा कि सअद देखो अबु -हकम सय्यद अहले वादी के मुक़ाबला में यूं आवाज़ ऊंची नाकरो। कि यह अबुल-हकम जो है मक्का वाले अबुजहल का नाम अबुल-हकम लेते थे, मक्का की वादी का यह सरदार है। इस के सामने इस तरह बुलन्द आवाज़ से न बोलो। सअद रज़ि भी ग़ुस्से में थे उस की ये बात सुन कर उमय्या को कहने लगे कि जाने दो उमय्या तुम इस बात में न पड़ो। अल्लाह की कसम मुझे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की पेशगोई नहीं भूलती कि तुम किसी दिन मुसलमानों के हाथों से क़तल होगे। अर्थात उमय्या जो है वह मुसलमानों के हाथों से क़त्ल होगा। यह ख़बर सुनकर उमय्या बिन ख़लफ सख़्त घबरा गया और घर में आकर उसने अपनी बीवी को सअद रज़ि की इस बात की सूचना दी और कहा कि ख़ुदा की क़सम मैं तो अब मुसलमानों के ख़िलाफ़ मक्का से नहीं निकलूँगा। यह यक़ीन था कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने बात की है और हमेशा आप की बातें पूरी होती हैं तो मेरे बारे में भी यह बात पूरी हो जाएगी। लेकिन तक़दीर के लिखे पूरे होने थे। बदर के अवसर पर उमय्या को विवश हो कर मक्का से निकलना पड़ा और वहीं वह मुसलमानों के हाथ से क़तल होकर अपने अन्जाम को पहुंचा। यह उमय्या वही था जो हज़रत बिलाल रज़ि पर इस्लाम के कारण से निहायत सख़्त अत्याचार किया करता था।

(उद्धरित सीरत ख़ातमन्नबिय्यीन हज़रत साहिबज़ादा मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब रज़ि एम-ए पृष्ठ 280 से 282)

सही बुख़ारी की एक रिवायत में इस तरह ज़िक्र है कि हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसूद रज़ि से रिवायत है कि हज़रत सअद बिन मुआज़ रज़ि उमरा की नीयत से चले गए। हज़रत अब्दुल्लाह रज़ि कहते थे और वह उमय्या बिन ख़लफ अबू सफ़वान के पास उतरे। उन्होंने यह रिवायत की कि इस के पास उतरे। पुराना परिचय था। उमय्या हज़रत सअद रज़ि के पास मदीना में आ के ठहरा करता था और जब आप ने उमरा का इरादा किया तो यही सोचा कि इस के पास ठहरें और अमन से उमरा कर सकें। उमय्या की आदत थी कि जब शाम की तरफ़ जाता था तो मदीना से गुज़रता था और हज़रत सअद रज़ि के पास ठहरता था। जैसा कि मैंने कहा कि पुराना परिचय थी। वह उनके पास मदीना में ठहरता था तो आप ने, हज़रत सअद रज़ि ने भी इरादा किया कि इस के पास ठहरें। जब आप ने ज़िक्र किया कि मैंने उमरा करना है तो उमय्या ने हज़रत सअद रज़ि से कहा कि अभी इंतज़ार करो। जब दोपहर हो और लोग ग़ाफ़िल हो जाएं तो जा कर तवाफ़ कर लेना। रिवायत वाले कहते हैं कि उस समय में कि हज़रत सअद रज़ि तवाफ़ कर रहे थे क्या देखते हैं कि अबुजहल है। अबुजहल उस दौरान आ गया और वह कहने लगा यह कौन है? यह कौन है जो काबा का तवाफ़ कर रहा है? हज़रत सअद रज़ि ने कहा मैं सअद हूँ। ख़ुद ही जवाब दिया मैं सअद हूँ। अबुजहल बोला क्या तुम ख़ाना काबा का तवाफ़ अमन से करोगे हालाँकि तुमने मुहम्मद (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम)और इस के साथियों को पनाह दी है। हज़रत सअद रज़ि ने कहा हाँ। तब इन दोनों ने एक दूसरे को गालियां दीं। यह रावी रिवायत करते हैं। उमय्या ने हज़रत सअद से कहा अबुल हकम पर अपनी आवाज़ ऊंची न करो क्योंकि वह वादी में रहने वाले लोगों का सरदार है। हज़रत सअद रज़ि ने कहा अर्थात अबुजहल को कहा ख़ुदा की कसम अगर तुमने बैतुल्लाह का तवाफ़ करने से मुझे रोका तो मैं भी शाम से तुम्हारा व्यापार बंद कर दूँगा। हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसूद रज़ि कहते हैं कि यह सुनकर अमय हज़रत सअद रज़ि से यही कहता रहा कि अपनी आवाज़ को बुलंद न करो और उनको रोकता रहा। हज़रत सअद रज़ि ग़ुस्सा में आ गए और कहने लगे हमें इन बातों से रहने दो। मैं और यह अबुजहल बात कर रहे हैं, हमें बात करने दो और उमय्या को कहा कि मैंने मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से सुना है। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम फ़रमाते थे कि उमय्या को यही क़तल करवाने वाला है अर्थात अबुजहल जो है यही तुम्हारे क़त्ल का माध्यम बनेगा। उमय्या ने कहा, मुझे? हज़रत सअद रज़ि ने कहा हाँ। यह सुनकर उमय्या बोला अल्लाह की क़सम !मुहम्मद जब बात कहते हैं तो झूठी बात नहीं कहते।

आख़िर वह अपनी बीवी के पास वापस आया और कहने लगा क्या तुम्हें पता नहीं कि मेरे यसरबी भाई ने मुझ से क्या कहा है? उसने पूछा क्या कहा? उमय्या ने कहा कहता है कि उसने मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से सुना है कि वह कहते हैं कि अबुजहल ही मेरा क़ातिल होगा। उस की बीवी ने कहा अल्लाह की क़सम! मुहम्मद तो झूठी बात नहीं किया करते (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसूद रज़ि कहते थे कि जब वह बदर की तरफ़ निकले और मदद मांगने के लिए फ़र्यादी आया तो उमय्या की बीवी ने उसे कहा कि क्या वह बात तुम्हें याद नहीं जो तुम्हारे यसरबी भाई ने तुमसे कही थी। बदर के लिए जब निकलने लगे तो याद कराया कि तुम जा रहे हो लेकिन वह बात याद रखो। कहते थे उसने चाहा कि न निकले अर्थात उमय्या ने इस बात पर चाहा कि न निकले परन्तु अबुजहल ने उसे कहा कि तुम इस वादी के रईसों में से हो तो एक दो दिन के लिए ही साथ चलो। अत: वह उनके साथ दो दिन के लिए चला गया और अल्लाह तआला ने उस को क़त्ल करा दिया।

(सही बुख़ारी हदीस 3632)

एक दूसरी रिवायत में उमय्या बिन ख़लफ के जंग बदर में शरीक होने और क़तल किए जाने के बारे में यूं वर्णन हुआ है। हज़रत सअद रज़ि ने कहा उमय्या ख़ुदा की कसम मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से सुना है आप फ़रमाते थे कि वह अर्थात सहाबा तुम्हें मार डालेंगे। उसने पूछा मक्का में? हज़रत सअद रज़ि ने कहा कि यह मैं नहीं जानता। उमय्या हज़रत सअद की यह बात सुनकर बहुत डर गया। जब उमय्या अपने घर गया तो अपनी बीवी सफिया अथवा करीमा बिन्त मुअमर से कहने लगा कि हे उम्मे सफ़वान तूने सअद की बात सुनी जो उसने मेरे बारे में कही। बीवी ने कहा कि क्यों सअद क्या कहता है? इस पर उमय्या ने कहा वह कहता है कि मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उनसे वर्णन किया है कि वह मुझको मार डालेंगे। मैंने पूछा कि मक्का में? तो उसने कहा कि मैं नहीं जानता। फिर उमय्या ने कहा कि ख़ुदा की कसम मैं मक्का से निकलूँगा ही नहीं। इस क़दर भयभीत हो गया। जब बदर की जंग हुई तो अबुजहल ने लोगों से जंग के लिए निकलने को कहा और उमय्या को भी कहा कि अपने क़ाफ़िला को बचाने के लिए पहुँचो। उमय्या ने निकलना पसंद नहीं किया। अबुजहल उमय्या के पास आया। जब भेजे हुए पैग़म्बर का इन्कार कर दिया तो फिर अबुजहल ख़ुद आया और कहने लगा कि सफ़वान! जब लोग तुम्हें देखेंगे कि तुम ही पीछे रह गए हो जबकि तुम वादी के सरदारों में से हो तो वे भी तुम्हारे साथ पीछे रह जाएंगे। अबुजहल उसे समझाता रहा। आख़िर उमय्या ने कहा कि अगर तुमने मजबूर ही करना है तो ख़ुदा की कसम मैं मक्का से एक निहायत ही उम्दा ऊंट खरीदूंगा। इस के बाद उमय्या ने कहा उम्मे सफ़वान मेरे लिए सफ़र का सामान तैयार करो। अपनी बीवी से कहा तो वह उसे कहने लगी कि तुम वह बात भूल गए हो जो तुमसे तुम्हारे यसरबी भाई ने कही थी। कहने लगा नहीं। मैं भूला नहीं हूँ। मैं थोड़ी दूर उनके साथ जाना चाहता हूँ। वापस आ जाऊंगा आख़िर तक नहीं जाऊँगा। जब उमय्या निकला तो जिस मंज़िल में भी वह उतरता वहां अपना ऊंट का घटना बांध देता। वह यही सावधानी करता रहा यहां तक कि अल्लाह तआला ने बदर में उस को हलाक कर दिया

(सही बुख़ारी किताबुल मग़ाज़ी, बाब ज़िक्रे नबी मन यकतल बे बदर हदीस 3950)

इस क़तल की घटना का पहले भी एक जगह वर्णन हो चुका है और हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़ रज़ि के वर्णन में पिछले ख़ुत्बा में भी वर्णन हो चुका है जब हज़रत बिलाल रज़ि ने अन्सार को बुला कर उस के ज़ुल्म के कारण से उसे क़त्ल करवा दिया जो वह हज़रत बिलाल रज़ि पर किया करता था

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ी अल्लाह तआला अन्हो सअद बिन मुआज़ रज़ि के बारे में फ़रमाते हैं कि"मदीना के एक रईस सअद बिन मुआज़ रज़ि जो औस क़बीला के सरदार थे बैतुल्लाह का तवाफ़ करने के लिए मक्का गए तो अबुजहल ने उनको देखकर बड़े ग़ुस्सा से कहा। क्या तुम लोग यह ख़्याल करते हो कि इस मुर्तद (मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) को पनाह देने के बाद तुम लोग अमन के साथ काबा का तवाफ़ कर सकोगे और तुम यह सोचते हो कि तुम उस की सुरक्षा और सहायता की शक्ति रखते हो? ख़ुदा की क़सम अगर इस वक़्त तेरे साथ अबू सफ़वान न होता तो तू अपने घर वालों के पास बच कर न जा सकता। सअद बिन मुआज़ रज़ि ने कहा अल्लाह की कसम अगर तुम ने हमें काबा से रोका तो याद रखो फिर तुम्हें भी तुम्हारे शामी रास्ता पर अम्न नहीं मिल सकेगा

(दीबाचा तफ़सीरुल क़ुरआन, अन्वारुल उलूम भाग 20 पृष्ठ 235-236)

हज़रत सअद बिन मुआज़ रज़ि जंग बदर, उहद और ख़न्दक़ में रसूलुल्लाह अलैहि वसल्लम के साथ शामिल हुए। जंग बदर के रोज़ औस का झंडा हज़रत सअद बिन मुआज़ रज़ि के पास था।

(अत्तबकातुल कुबरा ले इब्ने सअद भाग 3 पृष्ठ 321-322 "सअद बिन मुआज़' दारुल कुतुब अल्इलमिया बैरूत 1990 ई)

जंग बदर के अवसर पर हज़रत सअद बिन मुआज़ रज़ि का जोश तथा जज़्बा और आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से मुहब्बत का इज़्हार इस घटना से होता है जो बदर में उन्होंने आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को अपनी राय दी थी और जिसका हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब रज़ि ने सीरत ख़ातमन्नबिय्यीन में यूं वर्णन किया है कि

जब मुसलमान वादी सुफ़रा ,सुफ़रा भी बदर और मदीना के मध्य एक वादी का नाम है जहां आपने बदर का सारा माल ग़नीमत मुसलमानों में बराबर तक़सीम फ़रमाया था। इस वादी में खजूर के दरख़्त और खेती बाड़ी भी बहुत होती है। इस के और बदर के मध्य एक मरहले की दूरी है। बहरहाल जब वह इस वादी के एक पहलू से गुज़रे और गुज़रते हुए ज़फ़रान में पहुंचे जो बदर से सिर्फ एक मंज़िल दूर है तो यह सूचना प्राप्त हुई कि क़ाफ़िला की सुरक्षा के लिए क़ुरैश का एक बड़ा भयानक लश्कर मक्का से आ रहा है। वह एक व्यापारिक क़ाफ़िला जो पहले था उस की मदद के लिए एक और बड़ा लश्कर आ रहा है। उनको शक था कि शायद मदीना वाले इस क़ाफ़िला पर हमला करने वाले हैं। अब चूँकि राज़ को छुपाने का अवसर गुज़र चुका था। छुपी हुई बात नहीं रही थी। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने तमाम सहाबा को जमा करके उन्हें इस ख़बर की सूचना दी और उनसे मश्वरा पूछा कि अब क्या करना चाहिए। कुछ सहाबा रज़ि ने निवेदन किया कि हे अल्लाह के रसूल! ज़ाहिरी संसाधनों का ध्यान करते हुए तो यही बेहतर मालूम होता है कि क़ाफ़ला से सामना हो क्योंकि लश्कर के मुक़ाबला के लिए हम अभी पूरी तरह तैयार नहीं। परन्तु आप ने इस राय को पसन्द न फ़रमाया। दूसरी तरफ़ अकाबिर सहाबा ने यह मश्वरा सुना तो उठ उठ कर जान क़ुरबान करने वाली तक़रीरें कीं और निवेदन किया कि हमारे जान तथा माल सब ख़ुदा के हैं। हम हर मैदान में हर ख़िदमत के लिए हाज़िर हैं। अत: मिक़दाद बिन असवद रज़ि ने जिनका दूसरा नाम मिक़दाद बिन अमरो भी था कहा हे अल्लाह के रसूल हम मूसा के अस्हाब की तरह नहीं हैं कि आप को यह जवाब दें कि जा तू और तेरा ख़ुदा जा कर लड़ो हम यहीं बैठे हैं बल्कि हम यह कहते हैं कि आप जहां भी चाहते हैं ले चलें हम आप के साथ हैं और हम आप के दाएं और बाएं और आगे और पीछे हो कर लड़ेंगे। आप ने यह तक़रीर सुनी तो आप का चेहरा मुबारक ख़ुशी से तमतमाने लगा। परन्तु इस अवसर पर भी आप अन्सार के जवाब के मुंतज़िर थे। चाहते थे कोई अन्सारी सरदार भी यही बातें कहे। वे कुछ बोलें क्योंकि आप को यह ख़्याल था कि शायद अन्सार यह समझते हों कि बैअत उक़बा के अधीन हमारा फ़र्ज़ सिर्फ इस क़दर है कि अगर ठीक मदीना पर कोई हमला हो तो उस की रक्षा करें। अत: बावजूद इस किस्म की जान क़ुरबान करने वाली तक़रीरों के आप यही फ़रमाते गए कि अच्छा फिर मुझे मश्वरा दो कि क्या-किया जाए? सअद बिन मुआज़ रज़ि रईस औस ने आप की इच्छा को समझा और अन्सार की तरफ़ से निवेदन किया कि हे अल्लाह के रसूल! शायद आप हमारी राय पूछते हैं। ख़ुदा की क़सम जब हम आप को सच्चा समझ कर आप पर ईमान ले आए हैं और हमने अपना हाथ आप के हाथ में दे दिया है तो फिर अब आप जहां चाहें चलें हम आप के साथ हैं और इस ज़ात की क़सम जिसने आप को हक़ के साथ मबऊस किया है कि अगर आप हमें समुंद्र में कूद जाने को कहीं तो हम कूद जाएंगे और हम में से एक आदमी भी पीछे नहीं रहेगा और आप इंशा अल्लाह तआला हम सबको लड़ाई में साबिर पाएँगे और हम से वे बात देखेंगे जो आप की आँखों को ठंडा करेगी। आप ने यह तक़रीर सुनी तो बहुत ख़ुश हुए और फ़रमाया कि अल्लाह का नाम लेकर आगे बढ़ो और ख़ुश हो क्योंकि अल्लाह ने मुझ से यह वादा फ़रमाया है कि कुफ़्फ़ार के इन दो गिरोहों अर्थात लश्कर और क़ाफ़िला में से किसी एक गिरोह पर वह हमको ज़रूर ग़लबा देगा और ख़ुदा की क़सम मैं मानो इस वक़्त वह स्थान देख रहा हूँ जहां दुश्मन के आदमी क़त्ल हो कर गिरेंगे।

(उद्धरित सीरत ख़ातमन्नबय्यीन हज़रत साहिबज़ादा मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब रज़ि एम-ए पृष्ठ 354-355)(फरहंग-ए-सीरत पृष्ठ 173 ज़व्वार अकैडमी कराची 2003 ई)

और फिर वैसा ही हुआ

बहरहाल अभी उनका ज़िक्र चल रहा है। बाक़ी इंशा अल्लाह तआला अगले ख़ुत्बा में वर्णन होगा।

(अलफ़ज़ल इन्टरनैशनल17 जुलाई 2020 ई पृष्ठ 5 से 9)

☆ ☆

पृष्ठ 2 का शेष

पर तशरीफ़ ले गए। आज के प्रोग्राम के अनुसार यहां स्टरास बर्ग से फ़्रैंकफ़र्ट जर्मनी के लिए रवानगी थी।

साढ़े ग्यारह बजे हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ मस्जिद के हाल में तशरीफ़ लाए जहां ख़ुद्दामुल अहमदिया के इस ग्रुप ने जो फ़्रांस के दौरा के दौरान निरन्तर सैक्योरिटी की डयूटी अदा कर रहे हैं अपने प्यारे आक़ा के साथ ग्रुप फ़ोटो बनवाने का सौभाग्य पाया।

इस के बाद हुज़ूर अनवर ने मस्जिद के बाहरी सेहन में सेब का पौधा लगाया। सेब का पौधा लगाते हुए हुज़ूर अनवर ने यहां के मुबल्लिग़ सिलसिला मन्सूर अहमद साहिब से सम्बोधित होते हुए इरशाद फ़रमाया कि पहले साल जितने फल लगेंगे मुझे इतनी बैअतें चाहिएं।

इस के बाद हुज़ूर अनवर लोगों के मध्य तशरीफ़ ले आए जो सुबह से ही अपने प्यारे आक़ा को अल-विदा कहने के लिए मस्जिद के बाहरी सेहन में जमा थे। हुज़ूर अनवर ने इज्तिमाई दुआ करवाई और अपना हाथ ऊंचा कर के सबको अस्सलामो अलैकुम कहा और क़ाफ़िला यहां से जर्मनी के लिए रवाना हुआ। यहां से बैयतुस्सबूह की दूरी 240 किलोमीटर है।

लगभग 25 किलोमीटर का दूरी तय करने के बाद फ़्रांस और जर्मनी के बॉर्डर के क्षेत्र में एक पार्किंग में कुछ देर के लिए रुके। जहां जर्मनी से हुज़ूर अनवर के स्वागत के लिए आने वाले वफ़्द ने हुज़ूर अनवर को स्वागतम कहा। जर्मनी से अमीर जमाअत जर्मनी आदरणीय अब्दुल्लाह वागस हाऊज़र साहिब ,आदरणीय सदाकत अहमद साहिब मुबल्लिग़ इंचार्ज जर्मनी, आदरणीय इलयास मजोका साहिब नैशनल जनरल सैक्रेटरी और आदरणीय कमाल अहमद साहिब सदर मज्लिस ख़ुद्दामुल अहमदिया जर्मनी अपने ख़ुद्दाम की सैक्योरिटी टीम के साथ हुज़ूर अनवर के स्वागत के लिए आए थे।

इस अवसर पर स्टरास बर्ग फ़्रांस से इस स्थान तक छोड़ने के लिए साथ आने वाले वफ़द को हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने दया करते हुए हाथ मिलाने के सौभाग्य से नवाज़ा। स्टरास बर्ग फ़्रांस से इस स्थान तक आदरणीय अमीर साहिब फ़्रांस इशफ़ाक़ रब्बानी साहिब, उप अमीर असलम दूबरी साहिब, नसीर अहमद शाहिद साहिब मुबल्लिग़ इंचार्ज, जनरल सैक्रेटरी फ़हीम अहमद नयाज़ साहिब और सदर ख़ुद्दामुल अहमदिया फ़्रांस जमीलुर्रहमान साहिब अपनी ख़ुद्दाम की सैक्योरिटी टीम के साथ आए थे।

इस के बाद आगे सफ़र जारी रहा। लगभग 180 किलोमीटर का सफ़र तय करने के बाद आगे मोटर वे एक ऐक्सिडन्ट होने के कारण से पूर्ण तौर पर बंद कर दी गई थी। जिसके कारण 45 मिनट तक मोटरवे पर ही रुकना पड़ा। मोटरवे खुलने पर आगे सफ़र जारी रहा। मजमूई तौर पर 240 किलोमीटर का सफ़र तय करने के बाद दोपहर 3 बजे हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ का जमाअत जर्मनी के मर्कज़ बैयतुस्सबूह फ़्रैंकफ़र्ट में पधारे।

बैयतुस्सबूह में तशरीफ़ लाने के बाद जैसे हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ कार से बाहर तशरीफ़ लाए तो फ़्रैंकफ़र्ट शहर और उसके इर्दगिर्द की जमाअतों और सारे जर्मनी के विभिन्न शहरों से आए हुए जमाअत के लोग मर्दो औरतों और बच्चों और बच्चियों ने बड़े वालहाना और पुरजोश अंदाज़ में अपने प्यारे आका का स्वागत किया। अक़ीदत और मुहब्बत से हर तरफ़ हाथ ऊंचा थे और अह्लन व सहलन व मरहबा की सदाएँ हर तरफ़ ऊंची हो रही थीं।

एक तरफ़ लोगों बड़े जोश भरे अंदाज़ में अपने आक़ा को स्वागत कह रहे थे तो दूसरी तरफ़ औरतें अपने हाथ ऊंचा करते हुए अपने प्यारे आक़ा के दीदार से फ़ैज़याब हो रही थीं और बच्चे, बच्चियां विभिन्न ग्रुपस की सूरत में ख़ैर मुक़द्दमी गीत और दुआइया नज़्में पढ़ रहे थे। हर तरफ़ ख़ुशी तथा प्रसन्नता का माहौल था।

आदरणीय ख़्वाजा मुबश्शिर अहमद स्थानीय अमीर फ़्रैंकफ़र्ट, आदरणीय मन्ज़र अहमद शाहीन साहिब मुबल्लिग़ फ़्रैंकफ़र्ट ने हुज़ूर अनवर को स्वागत कहते हुए हाथ मिलाने के सौभाग्य प्राप्त किया।

अपने प्यारे आक़ा का स्वागत करने वाले यह लोगों फ़्रैंकफ़र्ट शहर के विभिन्न हलक़ों और जमाअतों के अतिरिक्त Gieben, Friedberg, Hanau, Mannheim, Mainz,Heidel burg, Hamburg, Wiesbaden से भी आए थे

कई लोगों और फ़ैमिलीज़ बड़े लंबे सफ़र तय कर के पहुंचे थे। विशेष रूप से हेमबर्ग से आने वाले 550 किलोमीटर का लंबा सफ़र तय कर के पहुंचे थे। हुज़ूर अनवर का स्वागत करने वालों की संख्या 2 हज़ार 4 सौ15 थी 3 बजकर 25 मिनट पर हुज़ूर अनवर ने तशरीफ़ ला कर नमाज़ ज़ुहर तथा अस्र जमा कर के पढ़ाईं। नमाज़ों की अदायगी के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ अपनी रिहायश गाह पर तशरीफ़ ले गए।

हुज़ूर अनवर के स्वागत के लिए जर्मनी की विभिन्न जमाअतों से जो मर्द तथा औरतों पहुंची थी इन सभी ने अपने प्यारे आक़ा के अनुकरण में नमाज़ ज़ुहर तथा अस्र अदा करने का सौभाग्य पाया। पिछले-पहर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने दफ़्तरी डाक, रिपोर्टें और ख़ुतूत मुलाहिज़ा फ़रमाए और हिदायतों से नवाज़ा। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ के दौरा के दौरान मर्कज़ लंदन के दफ़्तरों से इसी तरह मर्कज़ क़ादियान और रब्वह से और दूसरे विभिन्न देशों से नियमित डाक, रिपोर्टें और ख़ुतूत प्राप्त होते हैं। जो Fax और ई मेल बड़ी संख्या में डाक प्राप्त होती है। फिर जिस देश का दौरा होता है वहां के जमाअत के लोग मर्द औरतों और बच्चों की तरफ़ से मिलने वाले सैंकड़ों, हज़ारों ख़ुतूत इस के अतिरिक्त होते हैं। यह सभी डाक हुज़ूर अनवर अपने सफ़र के दौरान साथ के साथ मुलाहिज़ा फ़रमाते हैं और अपने मुबारक हाथ से उन ख़ुतूत, रिपोर्टस पर हिदायात से नवाज़ते हैं

8 बजे हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने तशरीफ़ ला कर नमाज़ मग़रिब इशा जमा कर के पढ़ाईं। नमाज़ों की अदायगी के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ अपनी रिहायश गाह पर तशरीफ़ ले गए।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ का निवास बैयतुस्सबूह में ही था। बैयतुस्सबूह के विभिन्न हिस्सों को रंग-बिरंगी झंडियों से सजाया गया था और इस सैंटर की विभिन्न इमारतों पर रौशनी भी की गई। रात को बिजली के रंग बिरंगे बल्ब बड़ा सुन्दर नज़ारा प्रस्तुत कर रहे थे और यह सारा क्षेत्र रोशनियों से रोशन था।

14 अक्तूबर 2019 ई (दिनांक सोमवार)

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने सुबह 6 बजकर 50 मिनट पर तशरीफ़ ला कर नमाज़ फ़ज्र पढ़ाई। नमाज़ की अदायगी के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ अपनी रिहायश गाह पर तशरीफ़ ले गए। सुबह हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने दफ़्तरी डाक मुलाहिज़ा फ़रमाई और विभिन्न दफ़्तरी मामलों को पूरा करने में व्यस्त रहे।

फ़ैमिली मुलाक़ातें

प्रोग्राम के अनुसार सवा ग्यारह बजे हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ अपने दफ़्तर तशरीफ़ लाए और फ़ैमली मुलाक़ातें शुरू हुईं। आज सुबह के इस सैशन में38 फ़ैमिलीज़ के 249 लोगों और दो लोगों ने इन्फ़िरादी तौर पर अपने प्यारे आक़ा से मुलाक़ात का सौभाग्य मिला।

मुलाक़ात करने वाली यह फ़ैमिलज़ जर्मनी की विभिन्न 25 जमाअतों से आई थीं और कई फ़ैमिलीज़ बड़े दूर के इलाक़ों से सफ़र करके आई थीं। जमाअत Dortmund से आने वाली फ़ैमिलीज़ दो सौ किलोमीटर का सफ़र तय करके पहुंची थीं। इस के अतिरिक्त पाकिस्तान से आए हुए एक दोस्त और देश लाइबेरिया से आई हुई एक फ़ैमिली ने भी मुलाकात का सौभाग्य पाया।

इन सब लोगों ने प्यारे आक़ा के साथ तस्वीर बनवाने का सौभाग्य भी पाया। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने शिक्षा प्राप्त करने वाले छात्रों और

इर्शाद हज़रत अमीरुल मोमिनीन

"अपनी इबादतों को भी विशेष करें और दुनिया को भी इस्लाम की वास्तविक शिक्षा से अवगत कराएं।"

(ख़ुत्बा जुम्अः 17 मई 2019)

तालिबे दुआ

KHALEEL AHMAD

S/O LATE HAJI BASHEER AHMAD SB AND FAMILY, JAMAAT AHMADIYYA BIJUPURA, SAHARANPUR (U.P)

अल्लाह तआला का उपदेश

(आले इम्रान 17) رَبَّنَآ اِنَّنَآ اٰمَنَّا فَاغْفِرْ لَنَا ذُنُوْبَنَا وَقِنَا عَذَابَ النَّارِ

हे हमारे रब्ब निसन्देह हम ईमान ले आए

अतः हमारे गुनाह माफ कर दे और हमें आग के अज़ाब से बचा।

तालिबे दुआ

MUHAMMAD MAJEED AND FAMILY

AMEER DIST: ROPAR. PUNJAB

छात्राओं को क़लम प्रदान फरमाए और छोटी उम्र के बच्चों और बच्चियों को चॉकलेट प्रदान फरमाए।

मुलाक़ातों का यह प्रोग्राम 1 बजकर 30 मिनट तक जारी रहा। इस के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ अपनी रिहायश गाह पर तशरीफ़ ले गए।

मस्जिद मुबारक का उद्घाटन आयोजन

आज के मुताबिक Wiesbaden शहर में "मस्जिद मुबारक' के उद्घाटन के आयोजन था। 4 बजकर 40 मिनट पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ अपनी रिहायश गाह से बाहर तशरीफ़ लाए और वेज़ बादिन के लिए रवानगी हुई। फ्रैंकफ़र्ट से वेज़ बादिन शहर का दूरी 46 किलोमीटर है। लगभग 55 मिनट के सफ़र के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ "मस्जिद मुबारक " में पधारे।

स्थानीय जमाअत के लोगों मर्द औरतें, बच्चे बच्चियां, जवान बूढ़े पिछले कई दिनों से अपने प्यारे आक़ा के आने की तैय्यारियों में व्यस्त थे। उन के लिए आज का दिन किसी ईद से कम नहीं था। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ के मुबारक क़दम उनकी सरज़मीन पर पड़ रहे थे। हर कोई बेहद ख़ुश था और अपने प्यारे आक़ा के आने का मुंतज़िर था। जैसे हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ गाड़ी से बाहर तशरीफ़ लाए तो जमाअत के लोग ने बड़े पुरजोश अंदाज़ में अपने आक़ा का स्वागत किया। बच्चों और बच्चियों के ग्रुपस ने स्वागत गीत प्रस्तुत किए। हर छोटा बड़ा अपने प्यारे आक़ा को स्वागत कह रहा था। मर्द नारे लगा रहे थे। औरतें अपने आक़ा के दीदार से फ़ैज़याब हो रही थीं।

स्थानीय अमीर जमाअत आदरणीय मियां उमर अज़ीज़ साहिब ने हुज़ूर अनवर को स्वागत कहते हुए हाथ मिलाने के सौभाग्य प्राप्त किया। एक सियासतदान काउंसलर Christoph Manjura साहिब जो मेयर के प्रतिनिधि के तौर पर आए थे। उन्होंने मेयर की तरफ़ से हुज़ूर अनवर को स्वागत कहा और हाथ मिलाने का सौभाग्य प्राप्त किया। हुज़ूर अनवर की सेवा में प्रिय दानयाल बिलाल और हज़रत बेगम साहिबा मद्दज़लहा अलाली की सेवा में प्रिया अनीक़ा अहमद ने फूल किए।

इस के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने मस्जिद की बाहरी दीवार में लगी तख़्ती की निक़ाब कुशाई फ़रमाई। इस के बाद हुज़ूर अनवर ने मस्जिद के हाल में तशरीफ़ ला कर नमाज़ ज़ुहर तथा असर जमा करके पढ़ाई। नमाज़ों की अदायगी के साथ मस्जिद का उद्घाटन हुआ । इस के बाद हुज़ूर अनवर ने जमाअत के इस नए सैंटर का निरीक्षण फ़रमाया।

मस्जिद का यह प्लाट साल 2013 ई में ख़रीदा गया था। इस प्लाट का कुल क्षेत्रफल 2970 वर्ग मीटर है। मस्जिद का कुल coverd हिस्सा 1300 वर्ग मीटर है

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने 4 जून 2014 ई को इस मस्जिद की नींव रखी। इस मस्जिद में आठ मीटर चौड़ा गुम्बद और 12 मीटर ऊंचा मीनार है। इस मस्जिद को बनाने पर 2.2 मिलियन यूरो ख़र्च हुए हैं। इस मस्जिद में सात सौ 50 नमाज़ी नमाज़ अदा कर सकते हैं

इस मस्जिद में नमाज़ के लिए दो हाल, एक मल्टी परपज़ हाल, पाँच दफ्तर, लाइब्रेरी, किचन, स्टोर और एक मुरब्बी हाऊस भी है। इस मस्जिद में एक बड़ा टियर्स भी है। मस्जिद, मिशन हाऊस और दफ्तर इत्यादि के निरीक्षण के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ दया करते हुए कुछ देर के लिए यहां के मुबल्लिग़ सिलसिला फ़र्हाद अहमद साहिब के घर तशरीफ़ ले गए।

इस के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज लजना के हाल में तशरीफ़ ले गए। जहां औरतों ने दर्शन का सौभाग्य पाया और लजना और बच्चियों के ग्रुपस ने दुआइया नज़्में और स्वागत तराने प्रस्तुत किए। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ लगभग 25 मिनट तक लजना हाल में मौजूद रहे और बच्चियां निरन्तर नज़्में और तराने पढ़ती रहीं जिसकी तैय्यारी उन्होंने कई हफ़्ते पहले से शुरू की हुई थी।

हुज़ूर अनवर ने दया करते हुए समस्त बच्चियों को जिनकी संख्या तीन सौ के लगभग थी, चॉकलेट प्रदान फरमाए। इस के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने मस्जिद के बाहरी सेहन में बादाम का एक पौधा लगाया।

इस के बाद मेयर के प्रतिनिधि काउंसलर Christoph Manjura ने भी एक पौधा लगाया। इस दौरान बच्चे एक क़तार में खड़े हो चुके थे। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने दया करते हुए बच्चों को भी चॉकलेट प्रदान फरमाई।

मस्जिद के उद्घाटन के हवाला से एक समारोह का आयोजन वेज़ बादिन के एक मशहूर हाल Kurhaus में किया गया था। यह इमारत 1810 ई में बनाई गई थी। फिर 1905 ई में इस को कई तब्दीलियों के साथ नए सिरे से बनाया गया। इस के बाद 1987 ई में इस में नए हिस्सों का इज़ाफ़ा किया गया और इस में कई तब्दीलियों के साथ नए सिरे से बनाने का काम किया गया है। यह इमारत वेज़ बादिन शहर में बहुत महत्त्वपूर्ण है और दुनिया के बड़े बड़े लीडर और हुकमरान यहां होने वाली आयोजनों में शामिल होते हैं। आज के इस समारोह में शामिल होने वाले मेहमानों की संख्या 370 थी। जिनमें

Gert Uwe-Mende लार्ड मेयर वेज़ बादिन

Frank-Tilo Becher मैंबर सुबाई असैंबली

Dr.Georg Manten मिनिस्ट्री आफ़ ऐंड आर्टिस्

Ferdinand Georgan भूतपूर्व जज

Christoph Manjura (हैडाफ़ डिपार्टमैंट इंटीग्रेशन, अज्जू कैश ऐं-डLiving)

Jeanine Rudolph हैडाफ़ इमीग्रेशन ऑफ़िस बादन)

Herr Phil Aspinal Coventry (Anglican Priest)

Herr Prof. Dr Markus Ferrari डायरेक्टर इंटरनल मैडीसनHSK

Herr.Dimitri Muntanion फैडरल पुलिस आफ़स

Waldemar Regner पुलिस अकैडमीHessen

Michael David डिस्ट्रिक्ट पुलिस आफ़ीसर

Vaneesa Krieger मैंबर आफ़ मिनिस्टरस

शामिल थे। उस के अतिरिक्त प्रोफ़ैसर्ज़, डाक्टरज़, इंजीनीयर्ज़, टीचर्ज़ ,वुकला ,विभिन्न हुकूमती दफ्तर में काम करने वाले हुक्काम, पुलिस के आफ़सरान और ज़िन्दगी के विभिन्न विभागों से सम्बन्ध रखने वाले लोग शामिल थे।

प्रोग्राम के अनुसार हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज साढ़े छ: बजे मस्जिद मुबारक से इस समारोह में शिरकत के लिए रवाना हुए। पुलिस ने विभिन्न सड़कें बलॉक करके रास्ता क्लीयर किया और क़ाफ़िले को Escort भी किया। 6 बजकर 50 मिनट पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ की Kurhaus में तशरीफ़ आवरी हुई। हाल के बाहर बाहरी दरवाज़ा पर लार्ड मेयर Gert Uwe Mende ने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ को स्वागत कहा और अपने साथ हाल के अंदर ले आए। हुज़ूर अनवर के आने से पहले समस्त मेहमान अपनी-अपनी सीटों पर बैठ थे।

प्रोग्राम का आरम्भ तिलावत क़ुरआन करीम से हुआ जो आदरणीय दानियाल दाऊद साहिब ने की। इस के बाद उस का जर्मन अनुवाद नौशेरवाँ ख़ान साहिब ने किया।

इस के बाद सबसे पहले आदरणीय नैशनल अमीर साहिब जर्मनी अब्दुल्लाह वागस हाऊज़र साहिब ने अपना परिचयात्मक सम्बोधन प्रस्तुत किया और मेहमानों को स्वागत कहते हुए वेज़ बादिन शहर और जमाअत का परिचय करवाते हुए कहा: शहर वेज़ प्रान्त Hessen की राजधानी है और इस का इतिहास बहुत पुराना मालूम होती है। इस शहर का नाम पहली बार Wiesbaden के नाम से 830 ई में मशहूर हुआ। इस शहर की आबादी दो लाख 80 हज़ार लोगों पर आधारित है। यह शहर खासतौर पर पानी के चश्मों के लिए मशहूर है। इसी तरह इस शहर में बहुत से विभिन्न विभागों की यूनीवर्सिटीयां स्थापित हैं और इस वजह से यहां बहुत अधिक छात्रों रहते हैं।

जमाअत अहमदिया का परिचय करवाते हुए अमीर साहिब ने बताया कि यहां अहमदियों की संख्या 1100 के क़रीब है। 1992 ई में यहां नियमित जमाअत स्थापित हुई। वेज़ बादिन में अब तक जमाअत कुल 13 Charity Walks आयोजित कर चुकी है जिसमें भरपूर संख्या में शहरी शामिल होते हैं। इस के अतिरिक्त जमाअत यहां नए साल के अवसर पर वक़ारे अमल भी करती है और अन्य मानव सेवा के प्रोग्रामों में शिरकत करती है। आख़िर पर अमीर साहिब ने सब मेहमानों का इस आयोजन में शमूलीयत पर शुक्रिया अदा किया।

उसके बाद Mr.Christoph Manjura ने अपना सम्बोधन प्रस्तुत किया।

इर्शाद हज़रत अमीरुल मोमिनीन

"अगर तुम चाहते हो कि तुम्हें दोनों दुनिया की फत्ह हासिल हो और लोगों के दिलों पर फत्ह पाओ तो पवित्रता धारण करो, और अपनी बात सुनो, और दूसरों को अपने उच्च आचरण का उदाहरण प्रस्तुत करो यहां तक कि सफल हो जाओगे।"

तालिबे दुआ

धानू शेरपा

सैक्रेट्री जमाअत अहमदिया देवदमतांग (सिक्कम)

महोदय सिटी काऊंसल के मैंबर हैं और उनका सम्बन्ध SPD की पार्टी से है। काऊंसल में उनकी ज़िम्मेदारी में integration के समस्त मामले शामिल हैं। महोदय ने अपने निवेदन में सबसे पहले हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ और फिर समस्त उपस्थित लोगों का स्वागत किया और सलाम प्रस्तुत किया। इस बात की ख़ुशी का भी इज़्हार किया कि इतनी अधिक संख्या में मर्द तथा औरतें हाज़िर हुए हैं जिनमें विभिन्न वर्ग के लोग शामिल हैं जैसे कि पुलिस के लोग और विभिन्न पालिटीशन्ज़ और वेज़ बादिन के हर वर्ग से सम्बन्ध रखने वाले लोग शामिल हैं

महोदय ने पुराने नमाज़ सैंटर का ज़िक्र करते हुए कहा कि पहले तो एक छोटे से कमरे में आप लोगों को अपनी इबादत और अन्य प्रोग्राम आयोजित करने पड़ते थे लेकिन अब एक बहुत उत्तम इमारत उपलब्ध है। इस बात की आप सबको मुबारकबाद प्रस्तुत करता हूँ।

Manjura साहिब ने और अधिक कहा कि मुझे तो यह आज का दिन बहरहाल कभी भी नहीं भूलेगा और हमेशा याद रहेगा क्योंकि मुझे आज मस्जिद मुबारक के उद्घाटन के अवसर पर अपनी ज़िन्दगी में पहली बार एक पौधा लगाने का अवसर है।

इसके अतिरिक्त यह कहा कि मुझे इस वक़्त बुनियाद रखे जाने का दिन भी याद आ रहा था कि इस दिन ख़ूब बारिश हो रही थी लेकिन जैसे ख़लीफ़ा आए और अपनी गाड़ी से उतरे तो साथ ही बारिश रुक गई और धूप आई।

उन्होंने और अधिक कहा कि अहमदिया मुस्लिम जमाअत तो हमेशा से ही नुमायां तौर पर शहर से सहयोग करती है। आप लोग Charity Walk आयोजित करते हैं, नए साल के अवसर पर वक़ारे अमल करके शहर की ख़ूबसूरती स्थापित रखने में हमेशा आगे रहते हैं। इसलिए भी यह ज़रूरी था कि आप लोग इस शहर के सैंटर में ही मस्जिद बनाएँ और न कि कहीं किनारे पर जहां किसी को मस्जिद का पता ही न लगे। अत: शहर के अंदर ही यह मस्जिद बनी है।

आख़िर पर उन्होंने जमाअत को मस्जिद के पूर्ण होने पर फिर मुबारकबाद प्रस्तुत की और कहा कि आप लोगों को इस मस्जिद से हमेशा लाभ पहुंचे।

इस के बाद Frank-Tilo Becher साहिब ने अपना सम्बोधन प्रस्तुत किया। महोदय का सम्बन्ध SPD पार्टी से है और यह Wiesbadenकी पार्लीमैंट के मैंबर हैं। उन्होंने सबसे पहले हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ को मुबारकबाद कहा और यह भी कहा कि उन के लिए यह एक बहुत ही बड़ा सम्मान है कि आज हुज़ूर अनवर के साथ एक मेज़ पर बैठने का अवसर मिल रहा है। महोदय ने कहा कि वह एक ईसाई हैं और यह उनकी दुआ है कि अल्लाह तआला इस घर यानी नई मस्जिद का मुहाफ़िज़ हो और उसे बाबरकत बनाए। आमीन।

फिर महोदय ने कहा कि एक जमाअत जो होती है उस के लिए अनिवार्य रूप से इकट्ठा होने का स्थान भी होना चाहिए होता है। इस तरह से वे ज़िन्दा और सही रंग में स्थापित रह सकती है। आज का दिन खासतौर पर जमाअत के मैंबरों के लिए ख़ुशी का दिन है क्योंकि अब आप लोगों को अवसर मिलेगा कि खुल कर अपने समस्त काम सरअंजाम दे सकें।

आख़िर पर उन्होंने कहा कि अगर अब हमें ऐसी जमाअत मिली है जो मेहमान नवाज़ी में इतनी उत्तम है, तो अब शहर Wiesbaden के स्थानीय लोगों का भी फ़र्ज़ बनता है कि इससे लाभ उठाएं और दिलचस्पी प्रकट करें। मस्जिद एक ऐसा स्थान भी है जहां आप लोग में inter -religious dialogue करें। इसलिए अब आप लोग उनकी मस्जिद में जाएं और सम्पर्क स्थापित करें।

इसके बाद लार्ड मेयर Gert Uwe Mende साहिब ने अपना सम्बोधन प्रस्तुत किया। मेयर ने सबसे पहले हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ को मुबारकबाद कहा और मस्जिद के मुबारक और बाबरकत होने के लिए दुआ की।

मेयर ने कहा कि जमाअत अहमदिया हमारे शहर का हिस्सा है। इस अवसर पर में आप लोगों को सबसे पहले मुबारकबाद प्रस्तुत करना चाहता हूँ कि आप लोगों की मस्जिद पूर्ण हो गई और आज इस का उद्घाटन भी हो गया।

फिर मेयर साहिब ने कहा कि यह मस्जिद वह स्थान हो सकती है जहां Wiesbaden के शहरी इकट्ठे हों और इधर inter-religious dialogue अधिक से अधिक हो। मेयर साहिब ने इस बात का भी ज़िक्र किया कि चूँकि मस्जिद मेरे घर के क़रीब है तो मैं जब सुबह के वक़्त इधर से गुज़रा तो मुझे स्पष्ट हो गया कि यह दिन आप सब के लिए एक मामूली दिन नहीं बल्कि निहायत महत्त्वपूर्ण दिन है।

महोदय ने कहा कि हमारे लिए यह बात निहायत ही ज़रूरी है कि हम मिल-जुल कर रहें। यक़ीनन बहुत से ऐसे लोग होंगे जिन्होंने मस्जिद अन्दर से कभी भी नहीं देखी होगी। तो अब हमारे पास एक मस्जिद मौजूद है जिसे हमें देखना भी चाहिए और अहमदियों के साथ मिल-जुल कर रहना चाहिए

फिर मेयर साहिब ने मस्जिद के पड़ोसियों का भी शुक्रिया अदा किया कि उन्होंने सारे लोगों ने काम के दौरान सहयोग किया। इसी तरह अहमदिया जमाअत ने भी पहले दिन से सब के साथ अच्छे तौर पर सम्पर्क रखा। अब मस्जिद के बनने के बाद भी यह बात ज़रूरी है कि आप लोग सब आपस में अमन और मुहब्बत से मिलकर रहें।

इस के बाद 7 बजकर 25 मिनट पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने ख़िताब फ़रमाया

ख़िताब हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने तशह्हुद ,ताव्वुज़ और तस्मिया के बाद फ़रमाया।

समस्त सम्मान्नीय मेहमान! अस्सलामो अलैकुम व रहमतुल्लाह व बरकातहो

अल्लाह तआला आप सबको हमेशा सलामती से और अमन से रखे। आज जमाअत अहमदिया इस हाल में इस फंक्शन का आयोजन इसलिए कर रही है कि इस शहर में उनको एक मस्जिद बनाने की तौफ़ीक़ प्राप्त हुई है। और यह विशेष रूप से जमाअत अहमदिया के लिए तो एक धार्मिक फंक्शन है और ख़ुशी का कारण है लेकिन मुझे यह देखकर बड़ी ख़ुशी हुई कि इस शहर के लोग भी बड़े खुले दिल तथा दिमाग़ के हैं और उन्होंने जमाअत अहमदिया मुस्लिमा के इस धार्मिक फंक्शन में जो उनकी मस्जिद, इबादत-गाह बनाने का फंक्शन था और इसका उद्घाटन था इस में शामिल होने के लिए न केवल हामी भरी बल्कि शामिल भी हुए और आज मुझे बहुत सारे चेहरे, आपकी जो अक्सरीयत नज़र आ रही है वह इस बात का प्रमाण है कि आप लोग इस शहर के रहने वाले लोग बड़े खुले और रोशन दिमाग़ के हैं।

मस्जिद के नाम से कई बार लोगों में शंकाएं भी पैदा हो जाती हैं। यद्यपि कि इस शहर में विभिन्न किस्म के लोग आबाद हैं , विभिन्न मुसलमान फ़िर्क़े भी आबाद हैं इसके बावजूद जो मुसलमानों की तरफ़ से शंकाए हैं वे ग़ैर मुस्लिम दुनिया में पैदा होती हैं।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया मस्जिद बनाने का असल उद्देश्य तो यह है कि एक ऐसा स्थान मिल जाए जहां हम इबादत कर सकें। एक ख़ुदा की अपनी धार्मिक शिक्षा के अनुसार इबादत कर सकें। कई लोग पश्चिमी दुनिया में, ग़ैर मुस्लिम दुनिया में समझते हैं कि मस्जिद में शायद ग़लत किस्म की मंसूबा बंदी भी हो सकती है, कई शिद्दत-पसंद भी आ सकते हैं लेकिन कुरआन करीम ने मस्जिद का जो उद्देश्य बताया है वह यह है कि एक ख़ुदा की इबादत के लिए जमा हों और फिर यह भी बताया कि तुम्हारी इबादत भी ऐसी होनी चाहिए जो ख़ुदा तआला के हक़ के साथ-साथ बंदों के हक़ भी अदा करने वाली हो। इसलिए कुरआन करीम ने बड़ा स्पष्ट फ़रमाया है कि उन लोगों की नमाज़ें उन लोगों पर उल्टा दी जाती हैं, उनको वापस कर दी जाती हैं या उनके लिए नुक़्सान का और हलाकत का कारण बन जाती हैं जो यतीमों का ध्यान नहीं रखते ,मिस्कीनों का ध्यान नहीं रखते, ग़रीबों का ध्यान नहीं रखते और इन्सानी क़दरों का किसी भी लिहाज़ से ध्यान न रखने हों।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया अत: एक बात यह स्पष्ट होनी चाहिए कि एक वास्तविक मुसलमान जब मस्जिद का नाम लेता है तो वह एक ऐसी इमारत का नाम लेता है जिसमें जा कर वह एक ख़ुदा की इबादत करे

इर्शाद हज़रत अमीरुल मोमिनीन ख़लीफतुल मसीह ख़ामिस

ख़िलाफत का निज़ाम भी अल्लाह तआला और उस के रसूल के आदेशों और निज़ाम का हिस्सा है।

(ख़ुत्बा जुम्अ: 24 मई 2019 ई)

तालिबे दुआ

मुहम्मद शुएब सुलेजा पुत्र जनाब मुहम्मद ज़ाहिद सुलेजा मरहूम तथा फैमली, अहमदिया जमाअत कानपुर (उत्तर प्रदेश)

हदीस नबवी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम

खड़े होकर नमाज़ पढ़ो और अगर खड़े होकर संभव न हो तो बैठ कर और अगर बैठ कर भी संभव न हो तो पहलु के बल लेट कर ही सही।

तालिबे दुआ

Sohail Ahmad Nasir and Family

Jamaat Ahmadiyya Adra,Dist: Puruliya. West Bengal

और जहां अपने लिए दुआ करें और अल्लाह तआला से मदद मांगें वहां दुनिया के लिए भी दुआ करें कि दुनिया में भी और माहौल में भी अमन तथा सलामती पैदा हो। इसी लिए हमारे जमाअत अहमदिया के संस्थापक जिन को हम मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम मानते हैं उन्होंने फ़रमाया कि अगर किसी क्षेत्र में इस्लाम का परिचय करवाना है तो मस्जिद बनाओ। अब इस्लाम का परिचय अगर किसी बुरी प्रसिद्धि के कारण से होता है तो उसका कोई लाभ नहीं। अगर इस्लाम का परिचय यह होता है कि इस मस्जिद में लोग दहशतगर्दी के मंसूबे बना रहे हैं तो इसका तो कोई लाभ नहीं बल्कि नुक़्सान है। परिचय तो तब ही हो सकता है और परिचय की बात तो इन्सान तभी करता है जब उस की ख़ूबियां वर्णन की जाएं। इसीलिए जब मस्जिद बनती है तो लोग और अधिक देखते हैं कि यह मुसलमान कैसे लोग हैं। और वास्तविक मुसलमान की जो मस्जिद है वह लोगों को यह प्रकट करती है कि इस मस्जिद में आने वाले जो लोग हैं वे दूसरों का विचार भी रखने वाले हैं। यह लोग सिर्फ इबादत करने के लिए नहीं आए बल्कि आपस में एक दूसरे का विचार रखने वाले हैं।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया क़ुरआन करीम में पड़ोसी का हक़ अदा करने का हुक्म है और पड़ोसियों की परिभाषा यह की गई कि तुम्हारे साथ रहने वाले पड़ोसी जो घरों के साथ रहने वाले हैं तुम्हारे साथ सफ़र करने तुम्हारे work colleague और सब वे लोग जिनसे तुम्हारा सम्बन्ध पड़ता है वे तुम्हारे पड़ोसी की सीमा में हैं। इस लिहाज़ से अगर देखें तो यहां कहा जाता है कि 1000 से ऊपर अहमदी रहते हैं तो लगभग पूरा शहर ही अहमदियों का पड़ोसी बन गया। और उनका हक़ अदा करना है और उनका हक़ अदा करने का स्तर क्या है? इस्लाम धर्म के संस्थापक हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हमें फ़रमाया कि पड़ोसी का हक़ अदा करने का स्तर यह है कि मुझे ख़ुदा तआला ने पड़ोसी का हक़ अदा करने की बार-बार इतनी ताकीद की है कि मुझे यह विचार पैदा हुआ कि शायद विरासत में भी पड़ोसी का हिस्सा रख दिया जाए। यह है पड़ोसी का हक़, जिस तरह आप अपने क़रीबी रिश्तेदार का,ख़ूनी रिश्तेदार का ,जो आपकी विरासत में हिस्सादार है उस का हक़ अदा करते हैं इसी तरह अपने पड़ोसी का हक़ अदा करना है। तो यह वह बात है जो एक वास्तविक मुसलमान को अपने धर्म की शिक्षाओं पर अनुकरण करते हुए और अपनी इबादत के लिए मस्जिद में जाते हुए सोचनी चाहिए और इस पर अनुकरण करना चाहिए।

यहां हमारे नैशनल अमीर साहिब ने ज़िक्र किया कि इस शहर में चश्मे भी हैं, पानी भी है, पानी की अधिकता भी है शायद आपको और वैसे भी इन तरक़्क़ी वाले देशों में जहां प्रत्येक समय जब भी अपने घरों में अपने पानी की टूटी खोलते हैं नलिका खोलते हैं तो पानी बहना शुरू हो जाता है तो आपको एहसास नहीं होता कि जिन देशों में पानी की क़िल्लत है तो उनका क्या हाल है। अफ़्रीक़ा में बहुत से ऐसे क्षेत्र हैं बल्कि लगभग 80 प्रतिशत ऐसे क्षेत्र हैं जो remote areas में हैं जहां पानी की सुविधा नहीं और 6 से 7 या 10 से 12 साल की उम्र के बच्चे छोटी बालटियां या बड़ी बालटियां अपने सुरों पर उठा के 2 से 3 किलो मीटर तक जाते हैं और पानी लेकर आते हैं। और सारा दिन इसी काम में व्यस्त रहते हैं और इसके कारण से शिक्षा से भी वंचित हो जाते हैं।

अमीर साहिब ने इस शहर की यह विशेषता भी बताई कि शिक्षा की तरक़्क़ी भी बहुत हो रही है। अब वे लोग जो न सिर्फ पानी से वंचित हैं बल्कि कई कई किलोमीटर चल कर एक ऐसे तालाब से पानी लेने जाते हैं जहां गंदा पानी है। इसी तालाब के पानी में जानवर भी पानी पी रहे हैं इसी से यह बच्चे भी पानी लेकर आते हैं और घरों में वो प्रयोग होता है। और फिर इतनी दूर सफ़र करने के कारण से, ग़रीबी के कारण से शिक्षा भी प्राप्त नहीं कर सकते। इन देशों में जमाअत अहमदिया जहां मस्जिदें बनाती है, जहां जमाअत स्थापित है वहां शिक्षा के लिए स्कूल भी बनाती है और पानी के लिए हैंडपंप और सोलर पंप भी लगा रही है और जब वे सोलर पंप या हैंडपंप चलते हैं और उनमें से साफ़ पानी ज़मीन से निकलता है तो मैं अक्सर कहा करता हूँ कि उस समय जो वहां बच्चों और लोगों के चेहरों पर ख़ुशी होती है और जो इस का इज़्हार होता है वह इसी तरह होता है कि जिस तरह यूरोप में किसी की कई मिलियन की लाटरी निकल आए तो उस पर ख़ुशी का इज़्हार करे।

तो यह चीज़ें हैं जो जमाअत अहमदिया जहां-जहां मस्जिद बनाती है वहां इस किस्म की मदद भी उपलब्ध करा रही है। हमारे सैंकड़ों स्कूल हैं, हस्पताल हैं और पानी के प्रोजेक्ट्स हैं,model village के प्रोजेक्ट्स हैं जहां हम यह सेवा करते हैं और यह सिर्फ़ अहमदियों के लिए नहीं बल्कि यह जो मानव सेवा के काम हैं, इस में हमारे क्लीनिक्स में आने वाले मरीज़ और स्कूलों में पढ़ने वाले 80 प्रतिशत वे लोग हैं जो ग़ैर-मुस्लिम हैं। ईसाई हैं या पेगन हैं या किसी दूसरे धर्म के हैं। तो हम बिना किसी भेद के यह सेवा करते हैं। वहां के स्थानीय अहमदी हैं वे मस्जिद में भी आते हैं और इस वजह से फिर लोगों को तवज्जा भी पैदा होती है लेकिन हमारा उद्देश्य ख़ालिस हो कर सेवा करना है और मानव सेवा के जो काम यहां हो रहे हैं इस का हमारे कई सम्मान्नीय मेहमानों ने अपनी तक़रीर में वर्णन भी किया कि charity के काम हम करते हैं या मानव सेवा के काम हम करते हैं तो यह काम जो हम कर रहे हैं, ग़रीब दुनिया में बहुत बढ़कर हम कर रहे हैं। यह जमाअत अहमदिया का एक विशेष्ता है कि हमने जहां भी रहना है मानव सेवा के काम करने हैं और मुझे उम्मीद है कि इस मस्जिद के बनने के बाद जो साल के शुरू में या विभिन्न वक़्तों में जो charity के या मानव सेवा के काम इस जमाअत के लोगों ने यहां किए, अब इस मस्जिद के बनने के बाद पहले से बढ़कर करेंगे और लोगों को यह बताएँगे कि वास्तविक इस्लाम यह है कि जहां ख़ुदा तआला की इबादत की तरफ़ तवज्जा करो वहां अल्लाह तआला की मख़लूक़ की तरफ़ भी तवज्जा करो

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया क़ुरआन करीम की जो पहली सूरत में पहली हिदायत यह दी कि अल्लाह तआला की प्रशंसा करो जो समस्त संसारों का रब है, प्रत्येक को पालने वाला है, वह यहूदियों का भी रब है, वह ईसाईयों को भी पालने वाला है, हिन्दुओं को पालने वाला है और मुसलमान को भी पालने वाला है और यही कारण है कि इस्लाम धर्म के संस्थापक हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हमेशा इन्सानी क़दरों को सामने रखा। इसी लिए क़ुरआन करीम ने भी आप को समस्त जहानों के लिए रहमत क़रार दिया है कई लोग कहते हैं कि इस्लाम शिद्दत-पसंद है और शिद्दत पसन्दी की शिक्षा देता है। लेकिन शिद्दत पसन्दी की शिक्षा इस्लाम ने कभी भी नहीं दी। अगर हम तारीख़ देखें और इन्साफ़ से इस्लाम की तारीख़ देखें तो इस्लाम धर्म के संस्थापक हज़रत रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के शुरू के 13 साल जो मक्का के थे इंतिहाई torture और persecution के साल थे। लेकिन आप ने इस का जवाब नहीं दिया। फिर इन ज़ुल्मों की वजह से, उन ज़ुल्मों को बर्दाश्त न करने की वजह से आप और आप के सहाबा वहां से हिजरत कर गए और जब मदीना गए तो वहां भी मक्का के काफ़िरों ने उनको अमन और शान्ति से रहने नहीं दिया और हमला किया। और क़ुरआन करीम में जंग करने का या सख़्ती से जवाब देने का जो पहला हुक्म है वह उस वक़्त हुआ जब मदीना हिजरत कर के गए और यह हुक्म क़ुरआन करीम की 22वीं सूरह में मौजूद है कि अब इन ज़ालिम लोगों का जवाब देना ज़रूरी है क्योंकि अगर उनका अब जवाब नहीं दिया तो यह लोग सिर्फ मुसलमानों को ख़त्म नहीं करना चाहते, क़ुरआन करीम में बड़ा स्पष्ट लिखा हुआ है कि ये लोग धर्म के ख़िलाफ़ हैं और उनके हमलों की वजह न कोई synagogue महफ़ूज़ रहेगा,न कोई चर्च महफ़ूज़ रहेगा,न कोई temple महफ़ूज़ रहेगा और न कोई मस्जिद महफ़ूज़ रहेगी। मानो कि इस एक हुक्म में क़ुरआन करीम ने यह नहीं फ़रमाया कि अपनी मस्जिदों की हिफ़ाज़त करो अपने धर्म की हिफ़ाज़त करो बल्कि यह फ़रमाया कि यह धर्म के दुश्मन हैं जो किसी भी धर्म को फिर ज़िन्दा नहीं रहने देंगे, इसलिए उनका जवाब देना ज़रूरी है और फिर मुसलमानों ने इस का जवाब दिया और क्योंकि ख़ुदा तआला की मदद उन के साथ थी इसलिए बावजूद इस के कि बड़ी well equiped बड़े हथियार तथा सामान के साथ जो फ़ौज मक्का से आई थी तो उनके मुक़ाबले पर लगभग तीसरा हिस्सा जो मुसलमानों

दुआ का अभिलाषी

जी.एम. मुहम्मद शरीफ़

जमाअत अहमदिया मरकरा (कर्नाटक)

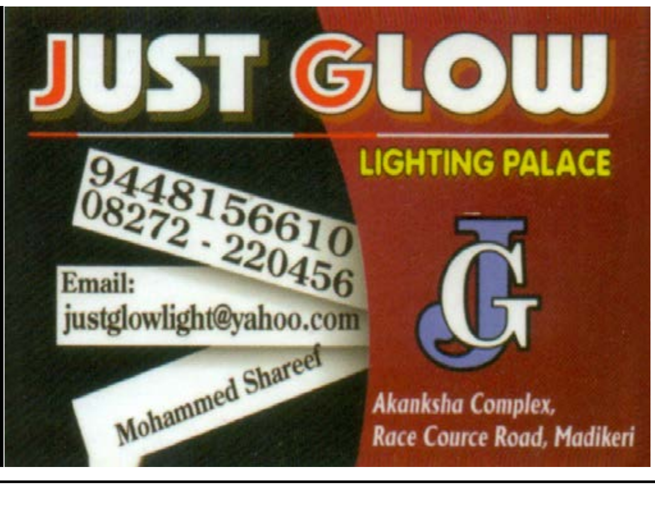

इस्लाम और जमाअत अहमदिया के बारे में किसी भी प्रकार की जानकारी के लिए संपर्क करें

नूरुल इस्लाम नं. (टोल फ्री सेवा) :

1800 3010 2131

(शुक्रवार को छोड़ कर सभी दिन सुबह 9:00 बजे से रात 11:00 बजे तक)

Web. www.alislam.org, www.ahmadiyyamuslimjamaat.in

EDITOR
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Editor : +91-9915379255
e -mail : badarqadian@gmail.com
www.alislam.org/badr

REGISTERED WITH THE REGISTRAR OF THE NEWSPAPERS FOR INDIA AT NO RN PUNHIN/2016/70553
Weekly BADAR Qadian
Qadian - 143516 Distt. Gurdaspur (Pb.) INDIA
POSTAL REG. No.GDP 45/ 2020-2022 Vol. 5 Thursday 30 July 2020 Issue No.31

MANAGER :
NAWAB AHMAD
Mobile : +91-94170-20616
e -mail:managerbadrqnd@gmail.com

ANNUAL SUBSCRIBTION: Rs. 500/- Per Issue: Rs. 10/- WEIGHT- 20-50 gms/ issue

का था और उनके पास कोई हथियार भी नहीं थे उन्होंने जंग की और फिर जीत भी गए। और यह पहली जंग मुसलमानों की हुई और यह इस जंग का background था। और यह हुक्म था क़ुरआन करीम का कि क्यों मुसलमानों को अब आज्ञा दे रहे है। लेकिन इसमें भी देखें कि इस्लाम धर्म के संस्थापक ने जो नर्मी का सुलूक उन लोगों से किया उनमें से जो लोग पढ़ना लिखना जानते थे जब जंग के बाद वे क़ैदी बनाए गए तो आप ने कहा कि क्योंकि शिक्षा भी एक ऐसी चीज़ है जो इन्सान को प्राप्त करनी चाहिए इसलिए जो काफ़िर क़ैदी, जो दुश्मन क़ैदी पढ़ना लिखना जानते हैं अगर वे मुसलमानों को पढ़ना लिखना सिखा दें तो उनको क़ैद से आज़ाद कर देंगे। इस हद तक आपने नर्मी का सुलूक किया उन लोगों से भी जो आपकी जान के दुश्मन थे सिर्फ इसलिए कि इन्सानी क़द्रें स्थापित हों ताकि इल्म से लोग लाभान्वित हों ताकि इलम फिर फैले और लोगों की जहालत दूर हो।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया इस्लाम धर्म के संस्थापक हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम जब मक्का में थे तो वहां के जो बड़े-बड़े सरदार थे (आप भी एक उच्च ख़ानदान के थे उन्होंने एक कमेटी स्थापित की जो ग़रीबों की मदद करने के लिए थी। लेकिन इसके बाद जब आप ने नबुव्वत का दावा किया तो काफ़िरों के जो बड़े सरदार थे वे आप के ख़िलाफ़ हो गए। लेकिन ग़रीबों की मदद का आपको इस क़दर एहसास था कि मदीना आ के भी जब ग़रीबों की मदद का कोई ज़िक्र हुआ कि charity के काम किस तरह हमें organize करने चाहिएं, किस तरह हमें ग़रीबों की बेहतरी के काम करने चाहिएं, तो आप ने फ़रमाया कि वे लोग जिनके साथ मैंने एक मुआहिदा किया था और हमने एक कमेटी बनाई थी और हम-ग़रीबों की मदद किया करते थे वे लोग बावजूद इसके कि मेरे मुख़ालिफ़ हैं और बावजूद इसके कि मुझे नबुव्वत का स्थान अल्लाह तआला ने दिया है, बावजूद इसके कि एक बड़ी संख्या मुसलमानों की मेरी मानने वाली है और मदीना में इस हुकूमत का सरबराह हूँ लेकिन अगर वे मुझे बुलाऐं तो आज भी मैं इन्सानियत की सेवा के लिए उन लोगों में शामिल होने के लिए तैय्यार हूँ, एक मैंबर की हैसियत से न कि ओहदेदार की हैसियत से। यह आपका स्थान था फिर आपकी नर्मी का यह हाल था, किस तरह आपने लोगों की इस क्षेत्र में integration के लिए भी काम किया integration की बातें यहां बहुत होती हैं। integration तो असल में तब पैदा होती है जब दूसरों की भावनाओं का भी विचार रखा जाए। एक स्थान पर आप बैठे हुए थे तो एक बच्चा का जनाज़ा गुज़रा। हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम खड़े हो गए आप के साथी वहां बैठे हुए थे। उन्होंने कहा यह तो एक यहूदी बच्चा का जनाज़ा है, आप उस के सम्मान में खड़े हो गए हैं तो आप ने फ़रमाया कि क्या यह यहूदी बच्चा इन्सान नहीं था। इसलिए मैं खड़ा हुआ हूँ कि हमें इन्सानी क़दरों को समझना चाहिए और इन्सानी क़दरों को जब हम समझेंगे तब हम दुनिया में सही प्यार और मुहब्बत फैला सकते हैं समाज में भी प्यार तथा मुहब्बत फैला सकते हैं और अमन और सुलह और मुहब्बत की फ़िज़ा स्थापित रख सकते हैं। अत: यह वे भावनाएँ थीं।

integration की बातें तो बहुत होती हैं और बड़ी अच्छी चीज़ है। मैं भी यही कहा करता हूं कि integration क्या चीज़ है? मेरे लिए integration यह है कि अब यहां जो अहमदी आए हैं अक्सरीयत उनकी मुहाजिर है जो विभिन्न देशों से और खासतौर पर पाकिस्तान से हिजरत करके आए हुए हैं। तो integration यह है कि वे इस शहर की बेहतरी के लिए अपनी समस्त सुविधाओं को प्रयोग करें यहां शिक्षा प्राप्त करके इस देश की सेवा करें। यहां समाज में लोगों की सेवा करें और उनकी बेहतरी के लिए काम करें। गवर्नमेन्ट पर बोझ बनने की बजाय कौंसल पर बोझ बनने की बजाय यह कोशिश करें कि अधिक से अधिक हम उनकी क्या सेवा कर सकते हैं और इसीलिए जमाअत अहमदिया इसी बात की अपने मानने वालों को अपने जमाअत के मैंबरों को नसीहत करती है कि तुम लोग यह कोशिश करो कि अधिक से अधिक पढ़ लिख कर इस देश की सेवा करो जहां तुम को ज़ाती लाभ होगा वहां इस देश को भी लाभ होगा।

इसलिए हम encourage करते हैं कि विज्ञान के मैदान में और दूसरे विभिन्न विषयों के मैदान में हमारे जो छात्र हैं लड़कियां भी और लड़के भी वे आगे बढ़ें ताकि देश की सेवा कर सकें, इस समाज में और इस देश में जिस में वे आ गए। यह इस देश का बड़ा एहसान है कि उसने उन्हें इधर स्थान दिया और वहां जहां आज़ादी से अपने देश में यह इबादत नहीं कर सकते थे यहां इबादत करने की आज़ादी दी। तो इस एहसान का बदला तब ही उतर सकता है कि जब हम इस देश के लिए पूरी दियानतदारी से अपनी सलाहीयतों के साथ जो कुछ हमारे पास है वे देने की कोशिश करें और देश की सेवा करें और वास्तविक integration है। जब तक यह हमारी सोच रहेगी मुझे उम्मीद है कि इंशा अल्लाह तआला जमाअत अहमदिया की नेक-नामी भी रहेगी और आप लोग भी यह महसूस करेंगे कि जमाअत अहमदिया की मस्जिद जो है किसी फ़ित्ना और फ़साद का स्थान नहीं बल्कि इस मस्जिद के बनने के बाद यह अहमदी सेवा के भावना की दृष्टि से और अधिक बेहतर हुए हैं।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया मुझे पता लगा है कि हमारे lord mayor साहिब इसी क्षेत्र में रहते हैं जहां मस्जिद है और उन्होंने बड़ी प्रशंसा भी की कि अहमदी बड़े integrate भी होते हैं दूसरे उन की integration कौंसल के जो प्रतिनिधि आए हुए थे उन्होंने भी यह बताया तो अब मैं अहमदियों को भी कहता हूँ कि पहले से बढ़कर इस मस्जिद के बनने के बाद अपनी समस्त सलाहीयतों के साथ इस शहर के लोगों की सेवा करें और इस देश के लोगों की सेवा करें और यह साबित करें कि हम लोग अमन की फ़िज़ा में रहना चाहते हैं।

धर्म प्रत्येक के दिल का मामला है क़ुरआन करीम ने बड़े स्पष्ट तौर पर फ़र्मा दिया है जो दूसरी सूरत है उस में बड़ा स्पष्ट लिखा हुआ है कि धर्म के बारे में कोई जबर नहीं प्रत्येक की इच्छा है कि जो चाहे वह धर्म धारण करे। इसलिए मुसलमान के दिल में यह विचार तो आना ही नहीं चाहिए कि वह किसी को ज़बरदस्ती मुसलमान बनाए या किसी ग़ैरमुस्लिम के लिए उसके दिल में भावनाएँ न हों। असल चीज़ इन्सानी क़द्रें हैं। इन्सानी क़दरों की हम हिफ़ाज़त कर लेंगे तो फिर समाज का अमन भी स्थापित रहेगा और यही इस ज़माना की ज़रूरत है इस से हट कर के धर्म क्या है और आप का धर्म किया है। ज़ैद का मज़हब क्या है और बकर का मज़हब क्या है। हम लोगों को यह चीज़ देखनी चाहिए कि हम लोग इन्सान हैं और जैसा कि मैंने शुरू में कहा कि ख़ुदा तआला ने हमें पहली सूरत में ही क़ुरआन करीम में यह बता दिया कि वह रब्बुल आलमीन है कि वह यहूदियों का भी ख़ुदा है वह ईसाईयों का भी है और हिन्दुओं का भी है और मुसलमानों का भी है और प्रत्येक से रहम का सुलूक करने वाला है। बल्कि जो धर्म को नहीं मानते, जो ख़ुदा को नहीं मानते वह उनका भी ख़ुदा है, उनको भी प्रदान कर रहा है। और बाक़ी जो धर्म पर अनुकरण नहीं करते या ख़ुदा को नहीं मानना है या धार्मिक शिक्षाओं पर अनुकरण नहीं करते हैं या ख़ुदा के मुक़ाबला पर किसी को खड़ा करना है उस की सज़ा अगर है तो हम समझते हैं कि वह अगले संसार में अर्थात जो अगली ज़िन्दगी है इस में है न कि इस ज़िन्दगी में है। और इस संसार में अल्लाह तआला ने हमें यही आदेश दिया है तुम प्रत्येक से दया और प्यार और मुहब्बत का व्यवहार करो। बल्कि क़ुरआन करीम में यहां तक लिखा हुआ है कि धर्म के बारे में अमन स्थापित रखने के लिए और मुहब्बत और प्यार की फ़िज़ा क़ायम रखने के लिए तुम लोग किसी के बुतों को भी बुरा न कहो। क्योंकि उस के मुक़ाबला में फिर वे तुम्हारे ख़ुदा को बुरा कहेंगे फिर आपस में गाली गलोच का एक सिलसिला चल पड़ेगा और फिर इस से प्यार और मुहब्बत और अमन की फ़िज़ा स्थापित नहीं रह सकेगी। इसलिए क़ुरआन-करीम की शिक्षा को अगर देखें तो वहां तो हर स्थान पर यही नज़र आएगा कि जितनी नर्मी की शिक्षा है इस पर हमें अनुकरण करना चाहिए और यही हमारी जमाअत अहमदिया की शिक्षा है और यही वह शिक्षा है जिसे हम दुनिया में इस्लाम के हवाला से फैलाते हैं और यही शिक्षा है जिस पर हम अनुकरण करने की कोशिश करते हैं और जैसा के मैंने कहा कि मैं उम्मीद रखता हूँ कि हमारे यहां के रहने वाले अहमदी पहले से बढ़कर इस मस्जिद की बनाने के बाद इस शिक्षा पर अनुकरण करने की कोशिश करेंगे और इस क्षेत्र में इस शहर में इस्लाम की जो प्यार और मुहब्बत की शिक्षा है और उनके अपने दोस्तों से जो व्यवहार हैं वे पहले से बढ़कर प्यार और मुहब्बत को फैलाने वाले होंगे मैं दुआ भी करता हूँ कि अल्लाह तआला उनको यह तौफ़ीक़ भी प्रदान करे। शुक्रिया।

(शेष...................)

☆ ☆

Printed & Published by: Jameel Ahmed Nasir on behalf of Nigran Board of Badar. Name of Owner: Nigran Board of Badar. And printed at Fazle-Umar Printing Press. Harchowal Road, Qadian, Distt. Gurdaspur-143516, Punjab. And published at office of the Weekly Badar Mohallah - Ahmadiyya, Qadian Distt. Gsp-143516, Punjab. India. Editor:Shaikh Mujahid Ahmad